Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 40 • 08 जुलाई - 14 जुलाई, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 06-07-2024 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

एकांत स्थान में साधना करने का मूल्य है, पर भीड़ में रहकर भी एकांत का-सा अनुभव करना परम मूल्यवान है।
- आचार्य श्री भिक्षु

मैत्री, प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ भाव है उत्थान का मार्ग : आचार्यश्री महाश्रमण

साधिक 13 मास का महाराष्ट्र प्रवास सम्पन्नता की ओर, साक्री में आयोजित हुआ महाराष्ट्र स्तरीय मंगल भावना समारोह

महाराष्ट्र को मिला धर्मोदय, अध्यात्मोदय, ज्ञानोदय, दर्शनोदय, चारित्रोदय और विकास का पावन आशीष

साक्री।
30 जून, 2024

महाराष्ट्र की यात्रा के अंतर्गत ज्योतिपुंज आचार्यश्री महाश्रमणजी साक्री पधारे। धर्म दिवाकर ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में अनेक वृत्तियां होती हैं। जो वीतराग या साधु नहीं हैं, सामान्य आदमी हैं उनमें राग और द्वेष के भाव भी उभर सकते हैं। अनुकूल-मनोज्ञ परिस्थिति में राग का व प्रतिकूल स्थिति में द्वेष का भाव उत्पन्न हो सकता है, अन्तराल में रहने वाला मध्यस्थ होता है।

चार अनुप्रेक्षाएं बताई गई हैं- मैत्री, प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ। उपाध्याय विनयविजयजी का संस्कृत भाषा का ग्रन्थ है- शांत सुधारस। उसमें सोलह भावनाओं का उल्लेख मिलता है। मैत्री, प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ - ये चार भावनाएं अहिंसा और समता से जुड़ी हुई हैं। हमारे व्यवहार को परिष्कृत करने में ये सहयोगी बन सकती हैं।

मैत्री भावना से चित्त सुवासित होता है। सब प्राणियों के प्रति मैत्री की भावना, मैत्री का अनुभव होना बहुत ऊंची बात है। जिनशासन में वह ज्ञान है जिससे आदमी राग से विराग की ओर आगे बढ़ता है, कल्याणों में अनुरक्त हो जाता है, उसका चित्त मैत्री से भावित हो जाता है, वह ज्ञान अध्यात्म का ज्ञान है। दुनिया के सब प्राणियों के साथ मेरी मैत्री है यह भावना चेतना की शुद्धि का उपाय है। गुणी, रत्नाधिक के प्रति विनय रखना, ईर्ष्या में नहीं जाना, इन प्रमोद भावनाओं से भी आत्मा अच्छी रहती है। जो पापों में रत हैं, दीन-हीन अज्ञानी लोग हैं, दुःखी हैं, हिंसा आदि में लगे हैं, उनके प्रति भी करुणा की, उनके उद्धार की भावना होना, धार्मिक, आध्यात्मिक सहयोग करना भी कारुण्य भाव है। जो विपरीत आचरण करने वाले हैं, हितोपदेश भी मानने वाले नहीं हैं तो उनके प्रति मध्यस्थ भावना रखें। हम अपनी शांति में रहें, उनको लेकर दुःखी नहीं बने। अर्हत भगवान भी उपदेश दे सकते हैं, पर सबको अच्छा बना ही देंगे यह बात कठिन है।

मैत्री, प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ ये चार अनुप्रेक्षाएँ हैं जो हमारे व्यवहार की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं और हमारी आत्मा को हल्का, निर्मल बनाने वाली हैं। जहां राग और द्वेष है, वह तो पतन का मार्ग है। मैत्री, प्रमोद, कारुण्य, वीतरागता व समता की साधना उत्थान का मार्ग है। राग-द्वेष विजेता, अर्हत्, जिन जिसके आराध्य देव हैं, वह जैन है। वीतराग जिनेश्वर भगवान के द्वारा बताया गया धर्म जैन धर्म है। जैन धर्म वीतरागता का धर्म है। अहिंसा, संयम, तप और समता राग-द्वेष को कमजोर बनाने वाले हैं। जिसने राग रुपी बीजों को दग्ध कर दिया है, वह अर्हत्-वीतराग होता है।

वीतरागता कसौटी है, जिसके कषाय क्षीण हो गए हैं, उसको जरूर मोक्ष मिलेगा, फिर वह आदमी किसी भी वेष, परिवेष, देश या सम्प्रदाय में हो। कषाय मुक्ति ही मुक्ति का आधार है। कहा गया है कि जिसने मद और मदन को जीत लिया है, शारीरिक-वाचिक-मानसिक विकारों से रहित हो गए हैं, आशा-लालसा निवृत्त हो गई है ऐसे जो मानव हैं, उनके लिए तो यही मोक्ष है। जो अतीत का अनुसन्धान नहीं करते, भविष्य का विचार नहीं करते और वर्तमान में तटस्थ भावों में हैं ऐसे साधक जीवन जीते हुए भी मुक्त हैं। राग-द्वेष जीतने में जो सफल हो गया है, न किसी से दोस्ती, न किसी से बैर, ऐसा कोई साधु होता है, वह बहुत बड़ी बात होती है।

(शेष पेज 4 पर)

पारस्परिक सम्बन्ध और प्रीती को तोड़ने वाला है गुस्सा : आचार्यश्री महाश्रमण

शेवाळी।
29 जून, 2024

अध्यात्म के सुमेरु आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि हमारे भीतर अनेक वृत्तियां जी रही हैं। उन वृत्तियों के कारण आदमी कभी अच्छे रूप में सामने आता है तो कभी दोषी-अपराधी के रूप में भी सामने आ सकता है। हमारे भीतर में जो वृत्तियां है वे सद्वृत्तियां भी है और असद्वृत्तियां भी हैं। सद्वृत्तियों में शांति-क्षमा का भाव, निरंहकारता, सरलता, संतोष आदि हैं। गुस्सा, अहंकार, माया, लोभ आदि असद्वृत्तियां हो जाती हैं।

गुस्सा मनुष्यों का शत्रु होता है। कभी गुस्सा मन में आता है पर व्यक्ति वाणी और शरीर पर नियंत्रण कर लेता है। कभी गुस्सा मन से वाणी में आ जाता है तो आदमी अनर्गल बोल देता है। गुस्सा जब शरीर पर असर करता है तो व्यक्ति लाल-पीला हो जाता है, प्रहार या मारपीट भी कर देता है। इस प्रकार गुस्सा तीन प्रकार का हो जाता है - मानसिक, वाचिक और कायिक। इस गुस्से को आदमी कम करने का प्रयास करे। शांति-क्षमा भाव में रहने का प्रयास करे।

गुस्सा प्रीति का नाश करने वाला होता है। खल और सज्जन के माध्यम से मैत्री की एक स्थिति बताई गयी है कि सूर्य के दो भाग कर लें - पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। सूर्य के पूर्वार्द्ध की छाया लम्बी होती है, बाद में धीरे-धीरे घटते-घटते बहुत छोटी हो जाती है। खल आदमी भी इसी तरह शुरुआत में तो बड़ा प्रेम दिखाते हैं, फिर धीरे-धीरे उनका स्नेह कम हो जाता है। सज्जन की दोस्ती उत्तरार्द्ध के सूर्य के समान होती है। पहले उसकी छाया छोटी होती है, बाद में बड़ी होती जाती है।

गुस्सा पाप कर्म का बन्ध कराने वाला होता है। मन में क्रोध का भाव आ भी जाए तो उसे वाणी में नहीं लाए। हमारे भीतर सहन करने की क्षमता बढ़े। घर में कलह को स्थान न दें। जहां त्याग है, दूसरों के हित का चिन्तन है, वहां सम्बन्ध अच्छा रह सकता है। हम साधु जो एक गुरु के शिष्य हैं, वो तो भाई-भाई ही हैं। सबमें आपस में सौहार्दपूर्ण व्यवहार रहे, एक दूसरे का सहयोग करें। गुस्सा पारस्परिक सम्बन्ध को तोड़ने वाला है, हम गुस्से को नियंत्रण में रखने का प्रयास करें, गुस्से को कृश और क्षीण करने का प्रयास करें। पूज्यवर के दर्शनार्थ ब्रह्मकुमारी कविता दीदी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

(शेष पेज 4 पर)

अतिलोभ की सीमा कर संतोष को धारण करें : आचार्यश्री महाश्रमण

नेर।
28 जून, 2024

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी आनंद खेड़े से विहार कर नेर पधारे। विशाल परिषद को पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए महामनीषी ने फरमाया कि प्राणी के भीतर लोभ की वृत्ति होती है। परिग्रह संज्ञा और लोभ संज्ञा होती है। अनेक संज्ञा लोभ की वृत्ति के आधार पर फलने-फूलने वाली होती है। बारहवें गुणस्थान वाला तो पूर्णतया लोभ की वृत्ति से मुक्त हो जाता है। सामान्य प्राणी में लोभ की चेतना होती है।

शास्त्रकार ने कहा है कि ज्यों-ज्यों लाभ होता है, त्यों-त्यों लोभ बढ़ता है। पदार्थों की दुनिया में लोभ की वृत्ति हो सकती है। तपस्या में थोड़ा और करने की भावना तो प्रशस्त है। तपस्या तो एक साधना है, तपस्या से समस्या का समाधान भी हो सकता है। लोभ की वृत्ति पर हमें नियंत्रण रखना चाहिये। साधु के तो सर्व परिग्रह विरमण महाव्रत है। ऐसी फकीरी के सामने अमीरी भी प्रणत हो जाती है। गृहस्थ जो संसार में रहने वाले हैं, वे अति लोभ की सीमा करे, संतोष को धारण करें। साधुत्व की सम्पदा के सामने गृहस्थ की बड़ी से बड़ी सम्पदा मिट्टी की तरह है।

आचार्य प्रवर ने आगे फ़रमाया - खान्देश स्तरीय कर्मणा जैन सम्मेलन हो रहा है। कर्मणा जैनों की संभाल होती रहे। सम्पर्क बना रहे तो प्रेरणा जाग सकती है। जैन धर्म के अच्छे संस्कार मिलते रहे, धार्मिक, आध्यात्मिक संयम का विकास होता रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में न्यू इंग्लिश स्कूल की ओर से अध्यापक प्रसाद शिंदे ने अपने विचार व्यक्त किए। स्कूल की छात्राओं ने स्वागत गीत का संगान किया। सम्मेलन के अंतर्गत अरुण पाटिल, प्रह्लाद बोराला, खानदेश क्षेत्र के आंचलिक प्रभारी ऋषभ गेलड़ा, खानदेश सभा के अध्यक्ष नानक तनेजा, अभिमन्यु पाटिल, मिनाक्षी पटेल ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कर्मणा जैन कन्या मण्डल ने गीत का संगान किया। कर्मणा जैन श्रद्धालुओं द्वारा नशामुक्ति आदि के संदर्भ में अनेक प्रस्तुतियां दी गईं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

योगी और अभोगी आदमी संसार व जन्म-मरण की परम्परा से हो जाता है विप्रमुक्त : आचार्यश्री महाश्रमण

धुलिया।
26 जून, 2024

जन-जन के उन्नायक परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी खान्देश के धुलिया में पधारे। महामनीषी ने आगम वाणी का रसपान कराते हुए फरमाया कि जैसे मक्खी श्लेष्म में चिपक जाती है, वैसे ही भोगासक्त व्यक्ति की आत्मा कर्मों का बन्ध कर लेती है। तीन शब्द हैं- योग, रोग और भोग। आसन-प्राणायाम आदि के सन्दर्भ में भी योग होता है और अध्यात्म-धर्म की साधना भी योग होती है। ध्यान, प्रतिसंलीनता की साधना भी योग है।

पांच महाव्रत, सम्यग् ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यग् चारित्र की साधना-आराधना करना बहुत बड़ा योग है। जप-स्वाध्याय भी योग है। संक्षेप में कहा गया- मोक्ष का जो ज्ञान, दर्शन, चारित्रात्मक उपाय है, वह योग है। हमें मानव जीवन प्राप्त है, इसमें योग अथवा अध्यात्म की साधना करना बहुत आवश्यक और बहुत लाभदायी है। पंचम गुणस्थान वाले तिर्यंच पशु भी योग साधना कर सकते हैं। देवताओं में भी एक सीमा में योग साधना हो सकती है। परन्तु धर्म की जो उत्कृष्ट साधना मनुष्य भव में की जा सकती है वह अन्यत्र संभव नहीं है। हमें मानव जीवन उपलब्ध है, उपलब्ध का अच्छा उपयोग करना चाहिये। जो आदमी शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श में राग भाव से लिप्त होता है वह भोगी होता है, कर्मों का बन्ध कर लेता है और संसार में भ्रमण करता रहता है। योगी और अभोगी आदमी संसार व जन्म-मरण की परम्परा से विप्रमुक्त हो जाता है।

जैन हो या अजैन जिसके जीवन में योग या धर्म है, उसका कल्याण अवश्य होगा। आदमी भोगों का संयम रखे, इच्छाओं और परिग्रह की सीमा रखे। श्रावक के बारह व्रतों में पांचवां व्रत है इच्छा परिमाण व्रत और सातवां व्रत है भोगोपभोग परिमाण व्रत। पदार्थ बहुत हैं पर व्यक्ति अपना संयम रखे। आदमी की इच्छाएं असीमित हैं पर आवश्यकता थोड़ी है। इच्छा और आवश्यकता में संतुलन रहना चाहिए। इच्छा और दुःख का संयोग है, इच्छा कारण है, दुःख कार्य है। अतिभोग से कहीं कोई रोग भी पैदा हो सकता है। व्यक्ति योग साधना करे, भोगों का संयम करे।

किए हुए कर्मों से छुटकारा नहीं मिल सकता है, उन्हें भोगना ही पड़ता है, पर उनमें भी समता का भाव रखें। समस्या आ भी जाए तो उसके निराकरण का प्रयास करें, उसके साथ मैत्री कर लें, समस्या हमें बाधित न कर पाए। बुढ़ापा आने पर भी कई बार व्यक्ति सक्रिय रह सकता है। हम योग साधना के प्रति जागरूक रहें। गृहस्थ जीवन में भी धर्म की साधना, अध्यात्म की आराधना करने का प्रयास करें। चित्त में समाधि रहे, दूसरों की भी जितनी हो सके धार्मिक-आध्यात्मिक सेवा करते हुए मानव जीवन को सफल-सुफल बनाने का प्रयास करें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जो व्यक्ति अपने आपको जानने, समझने लग जाता है, वह व्यक्ति सुख को प्राप्त कर लेता है। व्यक्ति की इन्द्रियां बाह्य जगत से अधिक सम्पर्क करती है। इस कारण वह दूसरों को देखता रहता है। दूसरों के दोषों को देखने वाला बड़ी-बड़ी विपत्तियों को प्राप्त कर लेता है। हम अपनी आत्मा को देखने का प्रयास करें।

संसारपक्ष में धुलिया से संबद्ध साध्वी सुयशप्रभाजी एवं साध्वी सौरभप्रभाजी ने अपनी जन्मभूमि में आचार्यप्रवर के स्वागत में अभिव्यक्ति दी। पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष नानक तनेजा, सूरजमल सूर्या, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा संगीता वेदमुथा, विद्यावर्धिनी महाविद्यालय की ओर से चेयरमैन अक्षय छाजेड़ ने अपने उद्गार व्यक्त किए। अहिंसा इंटरनेशनल स्कूल दोंडाइचा के विद्यार्थियों ने अणुव्रत गीत का संगान किया एवं स्कूल के मिहिर कुंवर व वंशिका शर्मा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

तेरापंथ समाज, धुलिया ने नाटिका प्रस्तुत की एवं धुलिया की बेटियों ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

संक्षिप्त खबर

एक मासिक प्रवास में मिला प्रतिभा निखारने का अवसर

लोंगोवाल। 'शासनश्री' साध्वी कनकश्रीजी (राजगढ़) के सान्निध्य में लोगोवाल में ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा नमस्कार महामंत्र की महत्ता पर रोचक परिसंवाद प्रस्तुत किया गया। हर रविवार को क्रमशः अन्त्याक्षरी, खुला प्रश्न मंच, एक मिनट प्रतियोगिता आयोजित की गई।

अच्छी संख्या में भाई बहनों ने भाग लिया। साध्वी निर्मलयशाजी ने कहा- प्रतियोगिता प्रतिभा को निखारने का उत्तम उपक्रम है। 'शासनश्री' जी का लोंगोवाल प्रवास लगभग एक महीने का रहा। साध्वीश्री के प्रवास से क्षेत्र में अच्छी जागृति आयी। प्रतियोगिता के विजेताओं को सभा के द्वारा पारितोषिक वितरित किया गया। साध्वी कुशलविभाजी व साध्वी गंभीरप्रभाजी की कार्यक्रम को संपादित करने में सक्रिय भूमिका रही।

किशोर मंडल द्वारा शेयर वार का भव्य आयोजन

सूरत। तेरापंथ युवक परिषद सूरत एवं तेरापंथ किशोर मंडल सूरत द्वारा 'SHARE WARS' कार्यक्रम का आयोजन महावीर कॉलेज ऑडिटोरियम किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किशोरों एवं युवाओं को शेयर बाजार के बारे में जानकारी देना था जिसके लिए एसडी जैन इंटरनेशनल स्कूल के सॉफ्टवेयर के माध्यम से 7 दिन के मार्केट में ट्रेडिंग से लोगों को जानकारी दी गयी। कार्यक्रम में मार्केट के उतार-चढ़ाव और मार्केट में आए बदलाव के समय क्रय-विक्रय की जानकारी प्रदान की गयी।

इस कार्यक्रम में 100 प्रतिभागियों के अतिरिक्त 150 से भी अधिक लोगों ने भी भाग लिया। मुख्य वक्ता सीए प्रवीण जैन ने शेयर बाजार के विषय में अमूल्य जानकारी देते हुए कहा कि शेयर मार्केट में इन्वेस्टमेंट की सोच से इन्वेस्ट करना चाहिए। ट्रेडिंग और शॉर्ट टर्म में जहां तक हो बचना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन जिनेश सिपानी, भव्य बोथरा, धैर्य गोठी, प्रथम संकलेचा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में अभातेयुप सदस्य मनीष मालू, पवन फुलफगर, प्रकाश छाजेड़ एवं तेयुप अध्यक्ष सचिन चंडालिया, पदाधिकारी, परिषद् सदस्य, ब्लू ब्रिगेड एवं किशोर मंडल सदस्यों के साथ श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन मंत्री श्रेयांस सिरोहिया ने किया।

ज्ञान कुंज चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

तोशाम। तेरापंथ भवन तोशाम में मुनि देवेंद्रकुमार जी एवं तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराजजी के सान्निध्य में ज्ञानशाला विभाग के अंतर्गत ज्ञान कुंज चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन तीन श्रेणियों में किया गया। प्रथम श्रेणी में जैन चिन्ह विषय पर, द्वितीय श्रेणी में स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत विषय पर एवं तृतीय श्रेणी में गति व कर्म विषय पर चित्र बनाए गए। प्रतियोगिता में 7 बच्चों ने भाग लिया। ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका कमलेश जैन, प्रशिक्षिका सलोनी जैन, शशि जैन एवं सहयोगी साक्षी जैन की उपस्थिति रही।

❖ सत्य के मार्ग पर चलने में परेशानी आ सकती है, किंतु सच्चाई के मार्ग पर चलने से मिलने वाली मंजिल सुखद होती है।
-आचार्य श्री महाश्रमण

अभिनन्दन एवं शपथ विधि समारोह आयोजित

इंदौर।

साध्वी रचनाश्रीजी के सान्निध्य में दीक्षार्थी बहन मुमुक्षु नुपुर का अभिनन्दन समारोह एवं तेरापंथ युवक परिषद का शपथ विधि समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि चिदानंद के चरणों में पूर्ण समर्पण का नाम है दीक्षा। गुरु के चरणों में समर्पण रखने वाला व्यक्ति जीवन को सफल बना देता है।

तेरापंथ की दीक्षा सर्वोत्तम दीक्षा है, इस संघ में दीक्षा लेने वाला टेंशन फ्री जीवन जीता है क्योंकि यहां पर सबकी चिंता स्वयं गुरु करते हैं। साध्वीश्री जी ने अपनी संसारपक्षीय भाणजी दीक्षार्थी बहन मुमुक्षु नुपुर के प्रति मंगलकामना करते हुए कहा कि तुम दीक्षित होने जा रही हो, गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित रहते हुए गुरु की दृष्टि में ही अपनी सृष्टि की रचना करती रहना। साध्वी गीतार्थप्रभाजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

मुमुक्षु नुपुर ने वैराग्य से दीक्षा आदेश तक की यात्रा का वर्णन करते हुए अपने साध्वी रचनाश्रीजी एवं इंदौर सभा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

दीक्षार्थी बहन के परिवार से कनक देवी चौरडिया और मोनिका डागा ने अपने विचार रखे। साध्वीवृंद ने समूह गीत का सुमधुर संगान किया। विभिन्न सभा संस्थाओं के पदाधिकारियों ने मुमुक्षु नुपुर के संयम जीवन के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। सभा के मंत्री राकेश भंडारी ने अभिनंदन पत्र का वाचन कर, समस्त पदाधिकारियों ने मुमुक्षु नुपुर को अभिनंदन पत्र भेंट किया। महिला मंडल ने अभिनंदन गीत प्रस्तुत किया। तेयुप द्वारा कार्यक्रम का मंगलाचरण किया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण का संयोजन सुमन दुगड़ ने किया।

कार्यक्रम का दूसरा चरण तेयुप शपथ ग्रहण समारोह के रूप में आयोजित किया गया। तेयुप के नवनिर्वाचित अध्यक्ष अर्पित पोरवाल एवं उनकी टीम ने जैन संस्कार विधि से शपथ ग्रहण की।

सभी संस्था के पदाधिकारियों ने नवनिर्वाचित युवक परिषद की टीम के प्रति मंगल मंगलकामना की।

दीक्षा केवल वेश परिवर्तन नहीं हृदय परिवर्तन है

उधना।

'शासनश्री' साध्वी विमलप्रज्ञाजी एवं साध्वी हिमश्रीजी आदि के सान्निध्य में तथा तेरापंथ सभा के तत्वावधान में आचार्य तुलसी का 28 वां महाप्रयाण दिवस एवं मुमुक्षु विकास बाफना का मंगल भावना समारोह का कार्यक्रम नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ हुआ। साध्वी विमलप्रज्ञा जी ने कहा- गुरुदेव तुलसी का व्यक्तित्व विराट व तेजस्वी था। वे एक विलक्षण संत थे।

आचार्यश्री तुलसी आत्मानुशासन के साथ परानुशासन करते थे। मुमुक्षु विकास के प्रति मंगलकामना करते हुए साध्वीश्री ने कहा- दीक्षा का मार्ग त्याग का मार्ग है, जिन भावों के साथ प्रस्थान कर रहे हो वह भाव प्रवर्धमान रहे।

साध्वी हिमश्रीजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि गुरुदेव श्री तुलसी एक ऐसे अलौकिक दीप थे जिन्होंने अपनी सतत साधना और तपस्या से असंख्य दीपों को ज्योतित किया।

ऐसे मसीहा मानव जाति के दीपस्तंभ होते हैं, जिनसे संपूर्ण मानव जाति प्रकाश प्राप्त करती है। आज मुमुक्षु विकास संयम के रथ पर चरणन्यास करने जा रहा है। जिसके भीतर साहस होता है वही इस सोपान पर आरोहण कर सकता है।

दीक्षा केवल वेश परिवर्तन नहीं हृदय परिवर्तन का नाम है। साध्वी मीमांसाप्रभा ने कहा कि गुरुदेव श्री तुलसी ने अपने जीवन में खुद का विकास किया तथा संघीय विकास कर सबको नए-नए आयाम दिए।

मुमुक्षु विकास ने अपने वक्तव्य में कहा - मेरे 10 वर्षों की साधना का ही प्रतिफल है मुझे सूरत में पूज्यप्रवर की सन्निधि ही नहीं बल्कि गुरु चरणों में जाने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है।

कार्यक्रम में महासभा की ओर से अनिल चंडालिया, उपाध्यक्ष फूलचंद छत्रावत, तेरापंथ सभा उधना के अध्यक्ष निर्मल चपलोत, महिला मंडल की ओर से महिमा चोरड़िया, युवक परिषद से मनोज बाबेल आदि ने अपनी भावनाएं भाषण एवं गीत के माध्यम से व्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा के मंत्री मुकेश बाबेल ने किया।

हैप्पी कपल खुशियां डबल कार्यशाला का आयोजन

तिरुपुर।

मुनि दीपकुमारजी के सान्निध्य में दंपत्ति कार्यशाला 'हैप्पी कपल खुशियां डबल' कार्यशाला एवं मंत्र अनुष्ठान का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ युवक परिषद के संयुक्त तत्वावधान में हुआ।

कार्यशाला का शुभारंभ मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति दी गई। मुनि दीपकुमारजी द्वारा मंत्र अनुष्ठान करवाया गया। कार्यशाला में मुनि दीपकुमार जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में दांपत्य जीवन की आदर्श परंपरा रही है। दंपत्ति परिवार की विशेष संपत्ति है। दांपत्य जीवन खुशहाल रहे इसके लिए '5टी' को जीवन में अपनाना होगा जिससे जीवन में खुशियां डबल हो सकती है। ट्रस्ट, टाइम, टॉकिंग, थैंक्स और टोलरेंस सुखी दांपत्य जीवन का आधार है। विश्वास रिश्तों की मजबूती के लिए आधार स्तंभ होता है। विश्वास नहीं है तो सात फेरों का संबंध टूटने में 7 मिनट की भी देरी नहीं लगती। रिश्तों में एक दूसरे के लिए समय और संवाद होना बहुत ही जरूरी है।

संवाद से समस्याओं का समाधान हो सकता है। धन्यवाद का भाव कपल के बीच में रहना चाहिए और सहनशीलता रिश्ते की अखंडता के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है।

मुनि काव्यकुमार जी ने 3'स' - सहना, समझना और सहयोग की व्याख्या की। परिषद मंत्री अमन चोरड़िया ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि काव्यकुमार जी ने किया।

आंचलिक प्रबुद्ध महिला सेमिनार का आयोजन

जलगांव।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल, जलगांव द्वारा खान्देश स्तरीय आंचलिक प्रबुद्ध महिला सेमिनार का भव्य आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की मंगल शुरुआत प्रेरणा गीत के संगान द्वारा की गई। मंडल की बहनों द्वारा अतिथियों के स्वागत में सुमधुर स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि महिलाएं समस्याओं से जूझकर आगे बढ़ रही हैं और आगे बढ़कर अपने साथ अपने कुल का व समाज का नाम रोशन कर रही हैं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा ने कहा कि हर संदर्भों व परिस्थितियों में हम सशक्त व सबल तभी होंगे जब हम अपने वास्तविक स्वरूप को सुरक्षित व संरक्षित रखते हुए विकास के पायदानों पर पदचिन्ह अंकित करेंगे। हमें आधुनिकता के साथ-साथ संस्कारी भी बनना होगा, तभी प्रबुद्ध महिला बन पाएंगे। ट्रस्टी कनक बरमेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। जलगांव महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला छाजेड़ ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय नेतृत्व एवं उनकी पूरी टीम, अतिथियों, खान्देश के 19 क्षेत्रों से पधारी हुई सैंकड़ों बहनों तथा जलगांव की प्रबुद्ध महिलाओं का स्वागत कर कहा कि नारी जाति के उन्नायक आचार्य श्री तुलसी ने नारी उत्थान के वो शाश्वत आयाम स्थापित कर दिए कि आज बड़े-बड़े आयोजन और कार्य प्रबंधन में तेरापंथ महिला समाज पूरी तरह से सक्षम है।

महामंत्री नीतू ओस्तवाल एवं कोषाध्यक्ष तरुणा बोहरा ने मॉडरेटर की भूमिका निभाते हुए टॉक शो के माध्यम से महिलाओं की भारतीय समाज में बदलती भूमिका, करियर के साथ पारिवारिक भूमिकाओं का संतुलन, महिला उद्यमियों की संख्या में वृद्धि, सांस्कृतिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के बीच संतुलन, राजनीतिक पदों पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढाना, गैर-पारंपरिक करियर की ओर झुकाव, भारत के विकास में महिलाओं के योगदान, महिला आरक्षण आदि अनेकों महत्वपूर्ण विषयों पर परिचर्चा की।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जलगांव लोकसभा सांसद स्मिता वाघ की उपस्थित रही। मुख्य अतिथि एवं पैनलिस्ट के रूप में मुंबई से मानसी ठक्कर उपस्थित थी। वर्षा चौरडिया एवं शिल्पा सेठिया द्वारा मंच संचालन किया गया। खानदेश से पधारे हुए सभी क्षेत्रों की महिला मंडलों को सर्टिफिकेट द्वारा सम्मानित किया गया।

प्रथम पृष्ठ का शेष

मैत्री, प्रमोद, कारुण्य...

वर्तमान में पूर्णतया वीतराग होना असंभव हो सकता है परन्तु वीतरागता के निकट पहुंचा जा सकता है। साधु तो वीतरागता की साधना करे ही, श्रावक-श्राविकाएं और अन्य गृहस्थ भी इस मनुष्य जीवन में वीतराग बनने की साधना करे। राग-द्वेष को कृश करने का, जीवन को उन्नत बनाने का प्रयास करें। पूज्य प्रवर ने साक्री वासियों को अमृत स्नान कराते हुए भक्ति भावना, सेवा भावना पुष्ट रखने की प्रेरणा प्रदान की।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि आचार्य प्रवर का महाराष्ट्र का प्रवास सार्थक और सुफल प्रवास रहा है। मनोबल, आत्मबल, संकल्पबल, शरीरबल और संघबल से यात्राएं सफल होती हैं। आचार्य प्रवर संघ को गतिशील बना रहे हैं। नये-नये लोग पूज्यप्रवर के सम्पर्क में आते हैं। आप मानव जाति के उत्थान का प्रयास कर रहे हैं। आप एक जनोपकारक आचार्य हैं। आप में कष्ट झेलने का सामर्थ्य है, विपत्ति झेलने वाला ही आगे बढ़ सकता है। परम पूज्य आचार्यप्रवर परोपकार का कार्य करवा रहे हैं और संघ की प्रभावना को बढ़ा रहे हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष अनिल कांकरिया एवं स्थानकवासी श्रीसंघ से राजेन्द्र संचेती ने अपने उद्गार व्यक्त किए। सुश्री मित्तल कांकरिया ने पूज्यप्रवर के समक्ष वैराग्यपूर्ण भावना व्यक्त की। पूज्यप्रवर ने सुश्री मित्तल कांकरिया को मुमुक्षु रूप में साधना करने की स्वीकृति प्रदान करवाई। तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ कन्या मंडल, बुआ-बहनों ने पृथक-पृथक गीत का संगान किया। ज्ञानशाला की सुन्दर प्रस्तुति हुई। आरएसएस से शुभम गौड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री द्वारा महाराष्ट्र स्तरीय मंगलभावना समारोह के संदर्भ में प्रेषित पत्र का वाचन महावीर कांकरिया ने किया। मंगल भावना समारोह में साध्वी प्रज्ञाश्रीजी ने अपने विचार व्यक्त कर सहवर्ती साध्वी वृन्द के साथ गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल साक्री की अध्यक्षा सुरेखा कर्णावट, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष पीयुष कर्णावट, महाराष्ट्र विधानसभा के पूर्व स्पीकर अरुण भाई गुजराती, विधायक मंजुला गावित, धुलिया सभापति चंद्रहास चौपड़ा, दिलीप घोष, मुम्बई के प्रतिनिधि मनोहर गोखरु, पश्चिम महाराष्ट्र से मनोज संकलेचा, मराठवाड़ा से सुभाष नहार, खान्देश की ओर से नानक तनेजा ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

मंगलभावना के अवसर पर पूज्यप्रवर ने फ़रमाया- महाराष्ट्र में साधिक तेरस मास का यह प्रवास हुआ है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने महाराष्ट्र में प्रवास और विचरण किया था। गुरुदेव तुलसी का भी प्रवास हुआ था। इस बार कुछ अंशों में गुरुदेव तुलसी का अनुकरण हो गया, मानो शिष्य गुरु के पद्चिन्हों पर चला हो। गुरुदेव तुलसी ने विक्रम सम्वत 2011 में मुंबई में चातुर्मास किया था, मर्यादा महोत्सव भी किया और उसके बाद संभवतः पूना, औरंगाबाद पधारे थे, वही क्रम इस बार बन गया। कोंकण, लोणार आदि कुछ क्षेत्र हमारे बढ़ गए। लोगों ने अपना दायित्व निभाया, व्यवस्थाएं संभाली, प्रस्तुतियां दी। यात्रा के प्रवास का आधे से ज्यादा हिस्सा तो वृहत्तर मुंबई में ही हुआ। साक्री में यह मंगलभावना समारोह हो रहा है। महाराष्ट्र से विदाई का समय आ रहा है। महाराष्ट्र के लोगों में धार्मिक भावना बनी रहे। महाराष्ट्र के लोगों में धार्मिक चेतना, सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति के भाव बने रहें। महाराष्ट्र में धर्मोदय, अध्यात्मोदय, ज्ञानोदय, दर्शनोदय, चारित्रोदय और विकास होता रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पारस्परिक सम्बन्ध और...

छत्रपति शिवाजी माध्यमिक विद्यालय की ओर से प्रधानाध्यापिका सुनीता आस्मां नाईक, सरपंच प्रदीप नायरे व सुरेश सोलंकी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

ग्रहों की शुभता बढ़ा देती है पुण्यवत्ता व प्रभावकता को

चेम्बूर (मुंबई)।

मुनि कुलदीपकुमार जी के सान्निध्य में अष्टकर्म और नवग्रह विषय पर कार्यशाला का समायोजन हुआ। जनमेदिनी को संबोधित करते हुए मुनि कुलदीपकुमारजी ने अपने वक्तव्य में कहा जैन आगमों में अनेक रहस्य भरे हुए हैं, उन रहस्यों को खोजना, जानना और प्रयोग में लाना विशेष बात होती है। मुनि मुकुलकुमारजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि कर्म और ग्रहों में गहरी एकात्मकता है। कर्म का अर्थ है आचरण।

मनुष्य के कर्म ही उसके अच्छे बुरे व्यक्तित्व का आईना है। हमारा जीवन द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव से प्रभावित है। ग्रहों की शुभता जहां हमारी पुण्यवत्ता और प्रभावकता को बढ़ा देती है वही अशुभता कष्टों का ढेर भी लगा देती है। हमारे दैनिक जीवन में करने वाले कार्यों को ग्रहों और कर्मों की विशुद्धि को ध्यान में रखते हुए किया जाए तो हम एक तेजस्वी जीवन जी सकते हैं। जैन परंपरा में 88 महाग्रहों की चर्चा की गई है।

हमारे आचार, विचार और व्यवहार के संचालन में ग्रह प्रमुख रूप से निमित्त बनते हैं। जैन आगमो में वर्णित पूर्व राहु, ध्रुव राहु ,सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण, भस्म ग्रह ,धूमकेतु ग्रह आदि पर मुनि मुकुल कुमार जी ने विशिष्ट विवेचना की। उन्होंने मुद्रा विज्ञान, हस्तरेखा विज्ञान ,योगासन, मंत्र विद्या आदि के द्वारा कर्मों और ग्रहों को शुभ बनाने की जानकारी प्रदान की।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथी सभा मुंबई, तेरापंथ सभा ट्रस्ट चेंबूर, तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ किशोर मंडल एवं कन्या मंडल चेंबूर के कार्यकर्ताओं ने विशेष योगदान दिया।

योग एवं प्रेक्षाध्यान है तनाव मुक्त जीवन के लिए उपयोगी

राजराजेश्वरीनगर।

प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में तेरापंथ भवन राजराजेश्वरीनगर में राजराजेश्वरीनगर महिला मंडल एवं विजयनगर प्रेक्षाध्यान केन्द्र ने संयुक्त रुप से योग दिवस कार्यक्रम आयोजित किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ शिल्पा दक द्वारा त्रिपदी वन्दना के साथ हुआ। राजराजेश्वरीनगर महिला मंडल की बहनों ने प्रेक्षा गीत का संगान किया। महिला मंडल अध्यक्ष सुमन पटावरी ने सभी का स्वागत किया। प्रेक्षा प्रशिक्षिका मंजू लूणिया ने प्रेक्षाध्यान के संदर्भ मे अपने विचार रखे। शिल्पा दक ने योगासन के प्रयोग कराये तथा प्रेक्षा प्रशिक्षक छत्र सिंह मालू ने ध्यान का प्रयोग कराया। प्रेक्षा प्रशिक्षक साउथ कोऑर्डिनेटर तथा विजयनगर प्रेक्षाध्यान केन्द्र संयोजिका वीणा बैद ने उपस्थित बहनों को प्रेक्षाध्यान के बारे मे जानकारी देते हुए कहा कि प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों के से आवेश-आवेग व क्रोध को शांत कर एक शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का एवं शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनावों से मुक्त जीवन जीने की दिशा में कदम बढा सकते हैं। कार्यक्रम के प्रथम सत्र में करीब 40 बच्चों को योग एवं ध्यान के प्रयोग कराए गए तथा द्वितीय सत्र में महिला मंडल की 36 बहनों ने भाग लिया। धन्यवाद ज्ञापन महिला मंडल मंत्री पदमा मेहर ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रेक्षा प्रशिक्षिका पूनम दुगड़ ने किया।

भूल सुधार

अंक 37 के पृष्ठ 10 पर मुनि निर्मलकुमार जी के प्रति मुनि कमल कुमार जी के छंद में से द्वितीय की तीसरी और चौथी पंक्ति के बीच पढ़ें - 'महाश्रमण गुरु कृपा दृष्टि की महिमा सारी।'

संक्षिप्त खबर

विनम्र होकर सबको साथ लेकर काम करें

बांद्रा। साध्वी शकुन्तलाकुमारी जी के सान्निध्य में सभा व तेयुप का शपथ ग्रहण समारोह कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र उच्चारण से हुआ। तेयुप सदस्यों ने विजय गीत का संगान किया। अभातेयुप के सहमंत्री भूपेश कोठारी ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। बांद्रा सभा के अध्यक्ष प्रकाश बोहरा व तेयुप अध्यक्ष किशोर चपलोत ने स्वागत भाषण दिया। साध्वी शकुन्तलाकुमारी जी ने कहा- टीम की सफलता तभी होती है जब टीम का कप्तान स्वयं विनम्र होकर सबको साथ लेकर काम करे, मधुर वाणी से हर समस्या का समाधान करे और हमने काम किया है ऐसी भाषा बोले। साध्वी संचितयशाजी में सफल टीम के सूत्रों की विवेचना की।

साध्वी जागृतप्रभाजी ने कविता, साध्वी रक्षितयशाजी मधुर गीत से कार्यकर्ताओं में जोश जगाया। मुंबई सभा अध्यक्ष माणक धींग, आंचलिक महासभा प्रभारी दिनेश सुतरिया, अभातेयुप से राष्ट्रीय सहमंत्री भूपेश कोठारी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष नरेश सोनी, क्षेत्रीय प्रभारी अमित रांका ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन सुनील नौलखा द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन बांद्रा सभा मंत्री कमलेश धाकड़ द्वारा किया गया।

शपथ ग्रहण समारोह आयोजित

तिरुपुर। मुनि रश्मिकुमारजी एवं मुनि दीपकुमारजी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि से संस्कारक चेतन बरडिया द्वारा करवाया गया। मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

महासभा के कार्यकारिणी सदस्य व तिरुपुर प्रभारी प्रवीण बोहरा द्वारा नवनिर्वाचित अध्यक्ष अनिल आंचलिया को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई गई। उसके पश्चात अनिल आंचलिया द्वारा सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारियों और कार्यकारिणी के सदस्यों को शपथ दिलाई। मुनि रश्मिकुमारजी ने कहा कि सभी कार्यकर्ताओं को अच्छा कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की।

नवगठित टीम का शपथग्रहण

पल्लावरम्, चेन्नई। मुनि हिमांशुकुमारजी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा ट्रस्ट, पल्लावरम का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। मुनिश्री के नमस्कार महामंत्र मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेरापंथी महासभा तमिलनाडु आंचलिक प्रभारी विमल चिप्पड़ द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र वाचन के पश्चात 2024-2026 की नवगठित टीम के पदाधिकारियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलवाई।

पूर्वाध्यक्ष मांगीलाल पितलिया ने मंच संचालन करते हुए सभी पदाधिकारियों का परिचय प्रस्तुत किया। शपथ ग्रहण के पश्चात नवनिर्वाचित अध्यक्ष दिलीप भंसाली ने अपने दो वर्षीय विजन की प्रस्तुति दी। नवगठित टीम को प्रेरणा प्रदान करते हुए मुनि हिमांशुकुमार जी ने कहा कि देव, गुरु, धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा के साथ संघ और संघपति की आराधना करते हुए समाज विकास में सहभागी बनें। अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहते हुए तप, त्याग के साथ आध्यात्मिकता का भी विकास करते रहें।

महासभा की ओर से सभा प्रभारी ललित दुगड़ ने बधाइयाँ संप्रेषित की। नवगठित टीम में अध्यक्ष- दिलीप भंसाली, उपाध्यक्ष- किरण गिरिया, मंत्री- राकेश रांका, सहमंत्री- विकास धारीवाल, कोषाध्यक्ष- प्रिंस कटारिया, संगठन मंत्री- विवेक पितलिया, निर्वतमान अध्यक्ष- प्रकाश भंसाली को नियुक्त किया गया। धन्यवाद ज्ञापन नवमनोनीत मंत्री राकेश रांका ने दिया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान

■ **दिल्ली।** सुजानगढ़ निवासी दिल्ली प्रवासी कार्तिक मालू सुपुत्र हेमराज मालू के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक अशोक सेठिया ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संपादित करवाया। संस्कारको ने तेयुप दिल्ली द्वारा प्रदत्त बधाई संदेश का वाचन किया।

■ **लिलुआ।** तेरापंथ युवक परिषद्, लिलुआ द्वारा तेयुप लिलुआ के नूतन कार्यालय का जैन संस्कार विधि से शुभारंभ संस्कारक सुरेन्द्र सेठिया, अरूण नाहटा, आनंद लूणिया और मनीष डागा ने पूरे विधि विधान, मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। मुनि जिनेशकुमारजी ने कार्यालय में मंगल पाठ सुनाकर आध्यात्मिक कार्यों के लिए मंगल भावनाएं व्यक्त की।

नूतन गृह प्रवेश

■ **दिल्ली।** सुजानगढ़ निवासी दिल्ली प्रवासी निशा-तरुण बाफणा (सुपुत्र आशा देवी - स्व. पूनम चंद बाफणा) का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक हिम्मत राखेचा एवं नवीन जैन ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। संस्कारक नवीन जैन ने तेयुप दिल्ली की ओर से प्रदत्त बधाई संदेश का वाचन किया।

■ **दिल्ली।** राजलदेसर निवासी दिल्ली प्रवासी सम्पत देवी - नवरत्न मल चिंडालिया (सुपुत्र कानी देवी - कुंदनमल चिंडालिया) का नूतन गृहप्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश सुराणा एवं अशोक सिंघी ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

तेरापंथी सभा का शपथ ग्रहण समारोह

कटक।

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी, समणी करुणाप्रज्ञा जी व समणी सुमनप्रज्ञा जी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा का शपथ विधि समारोह संपन्न हुआ। समणीजी द्वारा नवकार मंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उपासक पानमल नाहटा ने सभा गीत का संगान किया।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र वाचन के उपरांत सत्र 2024-2026 हेतु चयनित अध्यक्ष मुकेश सेठिया को राष्ट्रीय अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया व निवर्तमान अध्यक्ष मोहनलाल सिंघी ने शपथ ग्रहण करवाई। तत्पश्चात नव अध्यक्ष ने अपने टीम की घोषणा करते हुए उपाध्यक्ष प्रथम मालचंद सिंघी, उपाध्यक्ष द्वितीय चैनरूप चौरड़िया, मंत्री रणजीत दूगड़, उपमंत्री प्रथम सुनील कोठारी, उपमंत्री द्वितीय मनीष सेठिया, कोषाध्यक्ष प्रकाश सुराणा, संगठन मंत्री मनोज दूगड़ व कार्यकारिणी सदस्यों के नामों की घोषणा की। समणी कमलप्रज्ञाजी ने अपने कहा कि गुरुदेव के इंगित अनुसार सभा की नई टीम कार्य करते हुए स्वयं का विकास करे, समाज का विकास करे व संघ प्रभावना में हेतुभूत बने। समणी करुणाप्रज्ञा जी ने भी विचार व्यक्त किये। समणी सुमनप्रज्ञाजी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने अपने वक्तव्य में नवगठित टीम को शुभकामना देते हुए महासभा के आगामी कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान की, धर्म संघ की गरिमा को अक्षुण्ण बनाए रखने का आह्वान किया व क्षेत्रीय स्तर पर किए जाने वाले कार्यों हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया।

महासभा के संरक्षक मोहनलाल सिंघी, तेममं अध्यक्षा ललिता सिंघी, तेयुप अध्यक्ष विकास नौलखा, कटक मारवाड़ी समाज के सचिव हेमंत अग्रवाल आदि ने शुभकामनाएं ज्ञापित की। उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन व मारवाड़ी युवा मंच ने नव अध्यक्ष का सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन सभा के निवर्तमान मंत्री चैनरूप चौरड़िया ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह कार्यक्रम आयोजित

मदुरै।

तेरापंथ सभा मदुरै का शपथ ग्रहण समारोह कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि रश्मिकुमारजी के नमस्कार महामंत्र एवं जाप से हुआ। तेरापंथ सभा के निवर्तमान अध्यक्ष अशोककुमार जीरावला ने तेरापंथ सभा मदुरै के नवमनोनीत अध्यक्ष गौतमचंद गोलेछा को शपथ दिलाई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष गौतमचंद गोलेछा ने उपाध्यक्ष के रूप में धीरज दुगड़ एवं अभिनंदन बागरेचा, मंत्री अभिषेक कुमार कोठारी, सहमंत्री जितेंद्र कुमार सुराणा एवं कमलेश संकलेचा, कोषाध्यक्ष धीरज पारख तथा संगठन मंत्री के पद पर नैनमल कोठारी एवं कार्यकारिणी के नामों की घोषणा कर नवगठित टीम को शपथ ग्रहण करवाई। कार्यक्रम में तेरापंथ परिवार एवं जैन समाज के कई वरिष्ठ एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। मुनि रश्मिकुमार जी एवं मुनि प्रियांशुकुमार जी ने नव मनोनीत टीम को संघ एवं संघपति के प्रति पूर्ण निष्ठा रखते हुए संघ हित में हर कार्य कर अपना एवं समाज का नाम रोशन करने प्रेरणा दी।

निवृतमान अध्यक्ष अशोक जीरावला, निवर्तमान मंत्री अभिनंदन बागरेचा, उपासक धनराज लोढ़ा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष लता कोठारी, उपासिका सरोज लोढ़ा आदि ने नवगठित टीम को बधाई एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित की। नवनिर्वाचित अध्यक्ष गोलेछा ने आचार्य प्रवर एवं मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं मदुरै तेरापंथ समाज के सभी सदस्यों का आभार जताया।

TPF के 15वें स्थापना दिवस पर विविध आयोजन

कांदिवली (मुंबई)

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, मुंबई जोन के तत्वावधान में 15वें स्थापना दिवस के अवसर पर भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के सहयोग से इस भव्य कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन, कांदिवली में किया गया। 'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी एवं साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में कार्यक्रम का शुभारम्भ शनिवार की सामायिक से हुआ। मुंबई जोन के अध्यक्ष राज सिंघवी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया एवं टीपीएफ 'भिक्षु भक्ति संध्या' के राष्ट्रीय कन्वेनर प्रवीण सिरोहिया ने अपने विचार व्यक्त किये। टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनीष कोठारी ने टीपीएफ के स्थापना दिवस के महत्व को समझाया एवं टीपीएफ के सभी उपक्रमों से अवगत कराया। टीपीएफ के एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना एवं मिशन 1313 के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

कार्यक्रम के मुख्य प्रायोजक, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, मुंबई के नव निर्वाचित अध्यक्ष माणक धींग ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए और टीपीएफ को हर संभव सहायता का आश्वासन दिया।

साध्वीवृन्द ने टीपीएफ के आयामों को एक गीतिका में समाहित करते हुए श्रावक समाज को मंत्र मुग्ध कर दिया। साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में टीपीएफ के इतिहास का विशद वर्णन किया और संगठन के प्रादुर्भाव की जानकारी दी।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण का आगाज़ सुमधुर गायक कमल सेठिया के द्वारा भक्तामर स्तोत्र के प्रथम श्लोक के उच्चारण से हुआ। उनकी सुमधुर आवाज़ एवं रोचक प्रस्तुती ने श्रोताओं को भक्ति रस में भाव विभोर कर दिया। कार्यक्रम का सफल संचालन टीपीएफ मुंबई वेस्टर्न शाखा के अध्यक्ष प्रशांत परमार ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन मंत्री कमल धारेवा ने किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में कमल मेहता (मुंबई जोन सेक्रेटरी) एवं टीपीएफ मुंबई जोन की सभी शाखाओं (मुंबई सिटी, मुंबई वेस्टर्न, मुंबई सेंट्रल, ठाणे, नवी मुंबई, पालघर) के सदस्यों का विशेष सहयोग रहा।

कार्यक्रम में शाखा अध्यक्ष नीरज मोटावत, कमलेश रांका, हेमंत जैन, दिलखुश मेहता एवं अंकित डांगी अपनी टीम के साथ उपस्थित थे। कार्यक्रम में लगभग 650 लोगों की उपस्थिति रही।

उत्तर पाड़ा

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में टीपीएफ कोलकाता-हावड़ा के तत्वावधान में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का 15वां स्थापना दिवस समारोह का आयोजन उत्तरपाड़ा स्थित गणभवन ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित सभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम धर्मसंघ की एक प्रमुख संस्था है। यह बुद्धिजीवियों की संस्था है, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के उर्वरा मस्तिष्क की देन है। बिखरे हुए मोतियों की इस संस्था ने माला में पिरोने का कार्य किया है। सभी सदस्यों में अनुशसन, विनम्रता, गोपनीयता का भाव विकसित हो, सभी व्यसन मुक्त व सात्विक जीवन जीएं। गुरु दृष्टि की आराधना करते हुए संघ के प्रति दायित्व को निष्ठा के साथ निर्वहन करें। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल, उत्तर पाड़ा के मंगलाचरण से हुआ। ज्ञानशाला बच्चों द्वारा-महाश्रमण अष्टकम् का संगान किया गया। स्वागत भाषण उत्तर पाड़ा सभा के अध्यक्ष निकेश सेठिया ने दिया। नगर पालिका के चेयरमेन दिलीप यादव ने अपने विचार व्यक्त किये। टीपीएफ की पांचों शाखाओं के अध्यक्ष-मंत्रियों द्वारा टीपीएफ गीत का संगान किया गया। ईस्ट जोन-1 के जोनल अध्यक्ष धर्मचंद धोड़वा ने टीपीएफ परिवार की ओर से स्वागत करते हुए विचार व्यक्त किये। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रकाश मालू ने टीपीएफ की गतिविधियों व टीपीएफ गौरव जयचंद मालू ने शिक्षा सहयोग परियोजना पर प्रकाश डाला। आभार ज्ञापन नेशनल फेमिना को कन्वीनर कंचन सिरोहिया ने किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने व सम्मान कार्यक्रम का संचालन खुशबू कोठारी ने किया।

सूरत

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम सूरत द्वारा 15वां स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ टीपीएफ सूरत फेमिना टीम के मंगलाचरण से हुआ। टीपीएफ सूरत के अध्यक्ष कैलाश जैन ने सबका स्वागत किया और संस्था के बारे में जानकारी दी।

डॉ. मुनि रजनीशकुमार जी ने टीपीएफ की जानकारी देते हुए सबको समाज के लिए उपयोगी साबित होने की प्रेरणा दी।

मुनि निकुंजकुमार जी ने आज के युग में प्रोफेशनल की ज़रूरत विषय पर अपने उद्गार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन धर्मेंद्र सेठिया एवं संचालन मंत्री संजय गादिया ने किया।

सफल बनने के लिए अपनाएं जीवन विज्ञान

तिरुवतियुर/चेन्नई। साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी ने महावीर जैन विद्यालय, तिरुवतियुर, चेन्नई में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जीवन में समस्या आती है, लेकिन हम डिगे नहीं, झुके नहीं, अपितु उनका सामना करें और आगे बढ़ते जाएं।

साध्वीश्री ने बालक-बालिकाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि जीवन को सफलतम बनाने के लिए आचार्य तुलसी द्वारा प्ररुपित अणुव्रत और जीवन विज्ञान को अपनाना होगा। उसके लिए आवश्यक है लक्ष्य का निर्धारण, इच्छाशक्ति और संकल्पशक्ति।

अन्त में साध्वीश्री ने स्मृति विकास, क्रोध शमन, मन की एकाग्रता इत्यादि के लिए प्रैक्टिकल प्रयोग से बच्चों को लाभान्वित किया। अणुव्रत आचार संहिता के माध्यम से व्यसनों से दूर रहने का प्रत्याख्यान करवाया।

साध्वी दक्षप्रभा ने भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत की। तेरापंथ सभा के मंत्री प्रमोद आच्छा ने साध्वीश्री का परिचय दिया। जैन हाईस्कूल के अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने स्वागत एवं कृतज्ञता ज्ञापित की।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की परिसम्पन्नता पर विविध आयोजन

आचार्यश्री महाश्रमणजी हैं कीर्तिधर महापुरुष

तंजाऊर।

तमिलनाडु के तंजाऊर शहर में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के 63वें जन्मदिवस, 15वें पदाभिषेक दिवस एवं 51वें दीक्षा दिवस का संयुक्त आयोजन "अभिवंदना समारोह" मुनि दीपकुमारजी ठाणा 2 के सान्निध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा कुंभकोणम द्वारा श्री शांतिनाथ जैन मंदिर में किया गया। मुनि दीपकुमारजी ने आचार्य अभिवंदना करते हुए कहा कि परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी कीर्तिधर महापुरुष हैं। दीक्षा के बाद से क्रमशः वे विकास कर रहे हैं। आपने दो-दो गुरुओं का वरदहस्त प्राप्त किया एवं आज आप धर्मसंघ के सरताज हैं। आपने संघ का दायित्व संभालने के बाद यात्राओं का जो कीर्तिमान बनाया वह अद्भुत है। आचार्यप्रवर 'तिन्नाणं तारयाणं' आगम सूक्त को चरितार्थ करते हुए स्वयं और परकल्याण में अहर्निश जागरूक हैं। मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी तीर्थंकर सम अतिशयधारी हैं। परिस्थितियों की प्रतिकूलताओं में भी आप अप्रभावित रहते हैं, आप साम्ययोगी, पापभीरू और महान संकल्पबली हैं।

ऐसे आचार्यप्रवर युग-युग तक धर्मसंघ का नेतृत्व कराते रहें। मुनि काव्यकुमारजी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी पुण्यशाली महापुरुष हैं। वे वात्सल्य की अनुपम धारा प्रवाहित करते हैं। मेरे जैसा छोटा साधु भी उनकी वत्सलता से गद-गद है। समारोह में तेरापंथ महिला मंडल कुंभकोणम की बहनों ने अभिवंदना गीत का संगान किया। ज्योति सुराणा, आरती रांका ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

सूर्य की तरह दैदीप्यमान हैं आचार्यश्री महाश्रमण

चेन्नई।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी का अभिवन्दना समारोह साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में परमार हाउस में अणुव्रत समिति की आयोजना में आयोजित हुआ। अनुशास्ता की अभिवन्दना में साध्वीश्री ने कहा कि आचार्यश्री स्थितप्रज्ञ की तरह हैं, उन्हें यश की चाह नहीं है। वे किसी भी परिस्थिति में अडिग, अडोल रहते हैं। न नेपाल का भूंकप, न चेरापूंजी की बारिश, न कोरोना महामारी उन्हें डिगा सकी। भीषण गर्मी में भी जन प्रतिबोध के लिए आप सदैव गतिशील हैं।

साध्वीश्री ने कहा कि आपके आभामंडल में आने वाला व्यक्ति अपने आपको तृप्त बना लेता है। आपका ललाट सूर्य की तरह दैदीप्यमान है। साध्वीश्री ने कहा कि उनकी अभिवन्दना के साथ उनके गुणों का जीवन में अवतरण होना ही हमारी सच्ची भावांजलि होगी। साध्वी दक्षप्रभाजी ने अणुव्रत गीत के संगान से मंगलाचरण किया। साध्वी मंयकप्रभाजी ने आचार्य प्रवर की संयम निष्ठा, इन्द्रिय संयम इत्यादि गुणों का विवेचन करते हुए कहा कि संयम से ही साधना के शिखर को प्राप्त किया जा सकता है। किल्पाक तेरापंथ सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष अशोक परमार ने कहा कि दृढ़ विश्वास और पूर्ण श्रद्धा के साथ गुरु के प्रति समर्पण भाव से ही सिद्धि प्राप्त होती है। मुख्य वक्ता गौतमचंद सेठिया ने कहा कि आचार्यश्री का जीवन पराक्रम, निरन्तरता, नियमितता, समर्पण, निरहंकारिता से परिपूर्ण है। अणुविभा की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा माला कातरेला ने आचार्य की अभिवन्दना में उनके ग्यारह गुणों की व्याख्या की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए अणुव्रत समिति मंत्री स्वरूप चन्द दांती ने अपने विचारों के साथ धन्यवाद ज्ञापन दिया।

सफलता के लिए ध्यान साधना है सर्वोत्तम टॉनिक

हिंदमोटर।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन शंकर विद्यालय में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हिन्दमोटर द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- जीवन के पहाड़ की चढ़ाई बहुत सीधी नहीं होती, इसमें कहीं चढ़ना पड़ता है, कहीं उतरना पड़ता है, कहीं घुमावदार पथ पर पार करना पड़ता है तो कहीं सीधी पगडंडी में चलना पड़ता है। परिस्थितियों को झेलने वाला ही सफलता के शिखर पर आरोहण कर सकता है। सफलता के लिए ध्यान साधना सर्वोत्तम टॉनिक है। ध्यान से चेतना का रुपान्तरण होता है। ध्यान से व्यक्ति शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक स्वास्थ्य को प्राप्त होता है। ध्यान का अर्थ है जागरूकता। गहराई से देखना ही प्रेक्षाध्यान है। प्रेक्षाध्यान से अन्तर्दृष्टि का विकास होता है, मन प्रसन्नता से भर जाता है और सुषुप्त चेतना जागृत होती है। इस अवसर पर मुनि परमानंदजी ने कहा- मानसिक शांति एवं संतुलन के विकास के लिए प्रेक्षाध्यान प्रक्रिया बहुत महत्त्वपूर्ण है। प्रेक्षाध्यान पद्धति आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की अनमोल देन है। महाप्राण ध्वनि का प्रयोग सभी के लिए बहुत लाभकारी है। मुनि कुणालकुमारजी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

सफलता के लिए ध्यान साधना सर्वोत्तम टॉनिक है। ध्यान से चेतना का रुपान्तरण होता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं के मंगलाचरण से हुआ। प्रेक्षा प्रशिक्षकों द्वारा प्रेक्षाध्यान गीत का संगान किया गया। स्वागत भाषण सभा के अध्यक्ष पंकज पारख ने दिया। कोषाध्यक्ष अशोक संचेती ने गीत एवं आभार ज्ञापन मंत्री मनीष रांका ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। कार्यशाला में अरुण नाहटा, मंजू सिपानी, प्रेमलता चोरड़िया ने प्रशिक्षण प्रदान किया।

संक्षिप्त खबर

शपथ ग्रहण समारोह

कोयंबटूर। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के सत्र 2024-26 की नव गठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण का कार्यक्रम स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। सर्वप्रथम नव निर्वाचित अध्यक्ष देवीचंद मंडोत को निवर्तमान अध्यक्ष उत्तमचंद पुगलिया ने शपथ दिलवाई। इसके पश्चात देवीचंद मंडोत ने अपनी कार्यकारिणी को शपथ दिलाई। स्थानीय जैन संस्कारक निर्मल बेंगवानी ने जैन संस्कार विधि से शपथ विधि संपन्न करवाई। धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष धनराज सेठिया ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह आयोजित

वापी। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा वापी का शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ भवन वापी मे हुआ। संस्कारक संजय भंडारी एवं संस्कारक कुलदीप कोठारी ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा जैन संस्कार विधि को परिसम्पन्न किया। नव मनोनीत सभा अध्यक्ष झंवर गुलगुलिया को निवर्तमान सभा अध्यक्ष महेंद्र मेहता ने शपथ दिलाई और नवमनोनीत अध्यक्ष ने अपनी नयी टीम को शपथ दिलाई। इस कार्यक्रम में महासभा से वापी सभा के प्रभारी नीतेश भंडारी एवं समस्त संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं श्रावक समाज बड़ी संख्या मे उपस्थिति रहे।

शपथ ग्रहण के साथ पाया संघ के प्रति दायित्व बोध का पाठ

बेलुर मठ।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में वृहत्तर-कोलकाता क्षेत्र की 13 श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभाओं का शपथ ग्रहण समारोह बेलूर मठ ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर 'हमारा धर्मसंघ हमारा दायित्व' विषय पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा - संघ गति है, शरण है, प्रतिष्ठा है, प्राण है, आलम्बन है। संघ शक्ति का विलक्षण स्रोत है। संघ में रहकर व्यक्ति अपनी साधना को तेजस्वी बना सकता है। मुनिश्री ने आगे कहा- संघ की वृद्धि में नेतृत्व वर्ग का योगदान रहता है, नेतृत्व करने वालों में संवेदनशीलता, श्रमशीलता, सहिष्णुता, स्वार्थ त्याग, सामञ्जस्य, श्रद्धा, समर्पण, नशामुक्ति व संघ हितैषिता का भाव होना चाहिए। जो सहना जानता है, सबको साथ लेकर चलता है, वह अच्छा नेतृत्व दे सकता है। आज 13 सभाओं का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित है, सभी के यशस्वी कार्यकाल के प्रति आध्यात्मिक मंगल कामना करता हूँ। सभी पद को भार नहीं उपहार समझकर संघ समाज की सेवा करें एवं अपने दायित्व के प्रति जागरुक रहते हुए अपने कार्यकाल को सफल बनाएं। इस अवसर पर मुनि कुणालकुमारजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायधीश गौतम चोरड़िया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा- आचार्य श्री तुलसी द्वारा रचित तेरापंथ प्रबोध तेरापंथ की छोटी भगवद गीता है। इसमें तेरापंथ के सिद्धान्त निरूपित किये गये हैं। इसमें कहा गया है- 'अपनी आत्मा ही अपनी पहरेदार हो' अर्थात स्वयं के पहरेदार स्वयं बनो, जिससे आप गलत कार्य व पाप से बच सकोगे। संघ की सेवा करने वालों को सबसे पहले स्वयं को सुधारना चाहिए। आने वाला युग शुचिता का युग है इसलिए दायित्व निर्वहन में शुचिता पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस अवसर पर महासभा के महामंत्री विनोद जी बैद ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा सभा अपने स्थान पर मुख्य संस्था के रूप में कार्य करती है। सभा का अध्यक्ष अपने क्षेत्र का प्रथम पुरुष होता है, जिसकी कार्यप्रणाली को पूरा श्रावक समाज देखता है इसलिए अध्यक्ष अपने दायित्वों के प्रति सजग रहे। नई टीम समरसता के साथ समाज में कार्य संपादित करने का प्रयास करें। सभा संचालन मार्गदर्शिका व श्रावक संदेशिका ये दो पुस्तकें हमारा नैतिक संविधान है। उनका पूर्ण सम्मान करते हुए उसका पालन करें। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन पूर्व न्यायाधीश गौतम चोरड़िया ने किया। स्वागत भाषण अरुण नाहटा ने एवं अतिथि परिचय राकेश सिंघी ने दिया। सभा एवं तेयुप सदस्यों ने गीत का संगान किया। महासभा महामंत्री विनोद बैद ने 13 सभाओं के अध्यक्ष एवं उनकी कार्यकारिणी को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। आभार ज्ञापन विवेक दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद एवं सम्मान सत्र का संचालन केवल सिंघी ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह आयोजित

टी.दासरहल्ली।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा ट्रस्ट दासरहल्ली के नवमनोनीत अध्यक्ष भगवतीलाल माण्डोत एवं तेरापंथ युवक परिषद् के नवमनोनीत अध्यक्ष कन्हैयालाल गाँधी ने जैन संस्कार विधि से दायित्व बोध ग्रहण किया। कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक मंगलाचरण से हुई। देवीलाल पितलीया ने मंगलाचरण का संगान किया।

कन्हैयालाल गाँधी एवं अनिल गादिया ने सभा गीत एवं विजय गीत का संगान किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने किया। तत्पश्चात संस्कारक विकास बांठिया एवं सह-संस्कारक दिलीप पितलिया ने जैन संस्कार विधि की प्रक्रिया संपन्न करवाई। तत्पश्चात संस्थापक अध्यक्ष लादूलाल बाबेल ने नवमनोनीत सभा अध्यक्ष को शपथ ग्रहण करवाया। नवमनोनीत सभाध्यक्ष ने अपनी कार्यकारणी की घोषणा करते हुए संरक्षक लादुलाल बाबेल, परामर्शक लोकेश बोहरा, प्रकाश गाँधी, उपाध्यक्ष प्रथम मनोहरलाल बोहरा, द्वितीय विनोद मेहर, मंत्री प्रवीण बोहरा, सहमंत्री प्रथम सुरेंद्र मेहर, द्वितीय विजय पितलिया, कोषाध्यक्ष रमेश बाबेल, संगठन मंत्री मनोज मेहता, प्रचार प्रसार प्रभारी हेमन्त गिलूण्डिया के साथ कार्यकारणी सदस्यों को शपथ ग्रहण करवाया। युवक परिषद नवमनोनीत अध्यक्ष कन्हैयालाल गाँधी को निवर्तमान अध्यक्ष देवीलाल गाँधी ने पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई। नवमनोनीत तेयुप अध्यक्ष ने अपनी कार्यकारणी की घोषणा करते हुए उपाध्यक्ष प्रथम अनिल गादिया, द्वितीय अशोक बोहरा, मंत्री शुभम बाबेल, सहमंत्री प्रथम गौतम भटेवरा, द्वितीय पंकज बाबेल, कोषाध्यक्ष लक्ष्मीलाल गाँधी, संगठन मंत्री कमलेश भटेवरा, प्रचार प्रसार प्रभारी निखिल बोहरा के साथ कार्यकारणी सदस्यों को शपथ ग्रहण करवाई।

शपथ ग्रहण समारोह आयोजित

सिकंदराबाद।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ भवन, बोलाराम में 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी आदि के पावन सान्निध्य में आयोजित तेरापंथ सभा के शपथ ग्रहण समारोह में नव मनोनीत अध्यक्ष सुशील संचेती को पूर्वाध्यक्ष बाबूलाल बैद के शपथ दिलाई। अध्यक्ष सुशील संचेती ने पदाधिकारी हिमांशु बापना (उपाध्यक्ष), नवीन छाजेड़ (उपाध्यक्ष), हेमन्त संचेती (मंत्री), मुकेश चोरड़िया (कोषाध्यक्ष), राकेशकुमार सुराणा (सहमंत्री), हुकुमचंद कोटेचा (सहमंत्री), अरिहंत गुजरानी (संगठन मंत्री) मनोनीत कर कार्यकारिणी की घोषणा की। 'शासनश्री' साध्वी शिवमालाजी एवं साध्वी अमितरेखा जी ने प्रेरणा प्रदान की।

विभिन्न सभा संस्थाओं के पदाधिकारियों ने नव मनोनीत अध्यक्ष सुशील संचेती के प्रति हार्दिक बधाई व आगामी सत्र हेतु अग्रिम शुभकामनाएं प्रेषित की। मंत्री हेमंत संचेती ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संबोधि

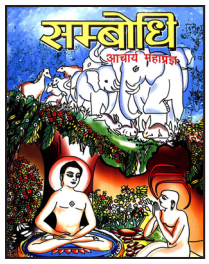

गृहस्थ-धर्म प्रबोधन

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

मेघः प्राह

१. गृहप्रवर्तन लग्नो, गृहस्थो भोगमाश्रितः ।
धर्मस्याराधनां कर्तुं, भगवन् ! कथमर्हति ?

मेघ बोला–भगवन् ! जो गृहस्थ भोग का सेवन करता है और गृहस्थी चलाने में लगा हुआ है, वह धर्म की आराधना कैसे कर सकता है?

महावीर ने कहा है-व्यक्ति गृहस्थ वेश में भी मुक्ति प्राप्त कर सकता है और साधु वेश में भी मुक्ति प्राप्त कर सकता है। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप तीर्थ में और इसके बाहर भी मुक्ति का द्वार बन्द नहीं है। यह दृष्टिकोण सम्पूर्ण सत्य पर आधारित है। मेघ की दृष्टि में यह प्रतिपादन नवीन था। उसे शंका हुई कि गृहस्थ साध्य को कैसे प्राप्त कर सकता है, जब कि वह गृहकार्यों में संलग्न रहता है? मुक्त श्रमण ही हो सकता है, इसलिए लोग घर छोड़कर प्रव्रजित होते हैं। यदि गृहस्थ जीवन में मुक्ति साध्य हो सकती है तो कौन श्रमण, भिक्षु बनने का कष्ट उठाएगा ?

दूसरा कारण यह भी रहा कि श्रमण परम्परा में श्रमण होने पर बल दिया गया। गृहस्थ जीवन में सत्य की घटना घटने के विरल ही उदाहरण हैं। श्रमण ही सब पापों से मुक्त हो सकता है-ऐसे संस्कारों के कारण लोगों का झुकाव श्रामण्य की ओर हुआ, श्रमण सम्मानित हुए और गृहस्थ अपूज्य। गृहस्थों के लिए मोक्ष का द्वार प्रायः बन्द जैसा रहा। गृहस्थ कितनी ही ऊंची साधना करे, वह श्रमण से नीचा ही है-ऐसी स्थिति में यह शंका कोई आश्चर्यजनक नहीं है।

भगवान् प्राह

२. देवानुप्रिय ! यस्य स्याद्, आसक्तिः क्षीणतां गता।
धर्मस्याराधनां कुर्यात्, स गृहे स्थितिमाचरन् ।

भगवान् ने कहा–देवानुप्रिय ! जिस व्यक्ति की आसक्ति क्षीण हो जाती है वह घर में रहता हुआ भी धर्म की आराधना कर सकता है।

३. गृहेऽप्याराधना नास्ति, गृहत्यागेऽपि नास्ति सा।
आशा येन परित्यक्ता, साधना तस्य जायते ॥

धर्म की आराधना न घर में है और न घर को छोड़ने में। उसका अधिकारी गृहस्थ भी नहीं है और गृहत्यागी भी नहीं है। उसका अधिकारी वह है, जो आशा को त्याग चुका है।

भगवान् का कथन है-मैंने साधक और गृहस्थ में कोई भेद-रेखा नहीं खींची है। साध्य की साधना के लिए प्रत्येक क्षेत्र खुला है। साधना हर कहीं हो सकती है। वह दिन में भी हो सकती है और रात में भी हो सकती है। अकेले में भी हो सकती है, बहुतों के बीच भी हो सकती है। सोते भी हो सकती है और जागते हुए भी। घर में भी हो सकती है और घर का त्याग करने पर भी। इसके लिए कोई प्रतिबंध नहीं है। प्रतिबंध एक ही है और वह है-आसक्ति का त्याग होना चाहिए। इन्द्रिय और इन्द्रिय विषयों में जब तक अनुराग है तब तक मुक्ति नहीं है, फिर भले वह साधक हो या गृहस्थ। आशा, इच्छा और आकर्षण ही बंधन है।

४. नाशा त्यक्ता गृहं त्यक्तं, नासौ त्यागी न वा गृही।
आशा येन परित्यक्ता, त्यागं सोऽर्हति मानवः ।।

जिसने घर का त्याग किया किन्तु आशा का त्याग नहीं किया, वह न त्यागी है और न गृहस्थ। वही मनुष्य त्याग का अधिकारी है, जो आशा को त्याग चुका है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

ध्यान की व्यूह-रचना

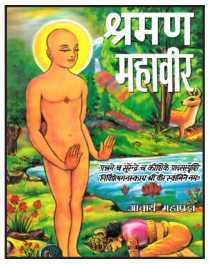

(पिछला शेष)

'पुष्य ! तुम ऊपर, नीचे-तिरछे कहीं भी देखो, धर्म का चक्र मेरे आगे-आगे चल रहा है। आचार मेरा छत्ररत्न है। उसमें जिस क्षण बीज बोया जाता है, उसी क्षण वह पक जाता है। क्या मैं चक्रवर्ती नहीं हूं? क्या तुम्हारे सामुद्रिक शास्त्र में धर्म-चक्रवर्ती का अस्तित्व नहीं है?'

'भंते ! बहुत अच्छा। मेरा सन्देह निवृत्त हो गया है। अब मैं स्वस्थ होकर जा रहा हूं।'

भगवान् राजगृह की ओर चल पड़े। पुष्य जिस दिशा से आया था उसी दिशा में लौट गया।'

ध्यान की व्यूह-रचना

महावीर का चक्रवर्तित्व प्रस्थापित होता जा रहा है। उनका स्वतंत्रता का अभियान प्रतिदिन गतिशील हो रहा है। चक्रवर्ती दूसरों को पराजित कर स्वयं विजयी होता है, दूसरों को परतंत्र कर स्वयं स्वतंत्र होता है। धर्म का चक्रवर्ती ऐसा नहीं करता। उसकी विजय दूसरों की पराजय और उसकी स्वतंत्रता दूसरों की परतंत्रता पर निर्भर नहीं होती। महावीर विजय प्राप्त कर रहे हैं-किसी व्यक्ति पर नहीं, किन्तु नींद पर, भूख पर और शरीर की चंचलता पर।

महावीर विजय प्राप्त कर रहे हैं-किसी व्यक्ति पर नहीं, किन्तु अहं पर, ममत्व पर और मन की चंचलता पर।

निद्रा-विजय

नींद जीवन का अनिवार्य अंग है। महावीर को शरीर शास्त्रीय नियम के अनुसार छह घंटा नींद लेनी चाहिए। पर वे इस नियम का अतिक्रमण कर रहे हैं। वे महीनों तक निरंतर जागते रहते हैं। उनके सामने एक ही कार्य है-ध्यान, ध्यान और निरंतर ध्यान।

जागृति की अवस्था में मनुष्य बाहर से जागृत और भीतर से सुप्त रहता है। तन्द्रा की अवस्था में मनुष्य न पूर्णतः जागृत रहता है और न पूर्णतः सुप्त ही। सुषुप्ति में मनुष्य बाहर से भी सुप्त रहता है और भीतर से भी। आत्म–जागृति (तूर्या) में मनुष्य बाहर से सुप्त और भीतर में जागृत रहता है। इस अवस्था में वह स्वप्न या संस्कारों का दर्शन करता है।

गाढ़ आत्म-जागृति में मनुष्य बाहर से सुप्त और भीतर से जागृत रहता है। इस अवस्था में चित्त शांत और संकल्प-विकल्प से विहीन हो जाता है।

महावीर कभी आत्म-जागृति और कभी गाढ़ आत्म-जागृति की अवस्था में चल रहे हैं। जागृति, तन्द्रा और सुषुप्ति की अवस्था को वे दीक्षित होते ही पार कर चुके हैं। प्रबुद्ध ने पूछा, 'महावीर ने साढ़े बारह वर्षों में कुल मिलाकर अड़तालीस मिनट नींद ली, यह माना जाता है। क्या यह सही है?' 'मैं भगवान् के पास नहीं था। मैं कैसे कहूं कि यह सही है और मैं पास में नहीं था, इसलिए यह भी कैसे कहूं कि यह सही नहीं है।'

'क्या सब बातें प्रत्यक्ष देखकर ही कही जाती हैं?'

'नहीं, ऐसा कोई नियम नहीं है।'

'तब फिर मेरे इस प्रश्न के लिए ही यह तर्क क्यों? क्या इसे जानने का कोई आधार नहीं है?'

'नहीं क्यों? आचारांगसूत्र का बहुत प्रामाणिक आधार है।'

'क्या उसमें लिखा है कि भगवान् ने केवल अड़तालीस मिनट नींद ली?'

'नहीं, उसमें ऐसा नहीं है।'

'तो फिर क्या है?'

'उसमें बताया है-भगवान् प्रकाम नींद नहीं लेते थे, बहुत नहीं सोते थे। वे अधिक समय आत्मा को जागृत रखते थे।[1]

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

विनम्रता का प्रयोग

वे विद्यावान् भी थे पर उनकी विद्या विनयविहीन नहीं थी। हमारे धर्मसंघ में वे 'सतयुगी' (सतयुग के व्यक्ति) अलंकरण से अलंकृत और विख्यात हुए। उनकी विशेषताओं ने उनको युवाचार्य पद तक पहुंचा दिया। युवाचार्य पद की प्राप्ति से भी अधिक उल्लेखनीय घटना है उसके साथ जुड़ी हुई उनकी निःस्पृहता।

तेरापंथ के द्वितीय आचार्य श्री भारीमालजी स्वामी ने युवाचार्य-नियुक्ति-पत्र में दो संतों के नाम लिखे। प्रथम नाम मुनि खेतसीजी का था और द्वितीय नाम मुनि रायचंदजी का।

"सर्वं साध साध्वी खेतसीजी तथा रायचन्दजी की आगन्या मांहें चालणो।" इस प्रकार युवाचार्य-नियुक्ति-पत्र में मुनि खेतसीजी के नाम का उल्लेख होने से स्पष्ट हो जाता है कि आचार्यश्री भारीमालजी के दिल में उनके प्रति कितना गहरा स्थान था।

दो नाम रखने का औचित्य न लगने पर युवाचार्य-नियुक्ति-पत्र में युवा मुनि रायचंदजी का ही नाम रखा गया। अपना नाम न रहने पर भी मुनि खेतसीजी ने जो निःस्पृहता और निर्लिप्तता का परिचय दिया वह उनकी विनम्रता (अहंकार विलय) का तो पुष्ट प्रमाण है ही, औरों के लिए बोधपाठ भी है।

निर्जरा के बारह भेदों में आठवां है 'विनय'। यह कोई सामान्य तपस्या नहीं है। यह एक तप भी जीवन में भलीभांति आचरित हो जाता है तो जीवन अनेक विशेषताओं का धाम बन जाता है। इस तप से तप्त हुए बिना कल्याण की पूर्णता पर प्रश्नचिह बना रहता है। अहंकार का भाव अर्हकार में बदल जाए तो विनय का तप कृतकृत्य हो जाता है।

संन्यासी ने एक बालक से पूछा- "क्या तुम मेरा चेला बनोगे?"

"चेला क्या होता है?" बालक ने पूछा।

"एक होता है चेला और एक होता है गुरु। गुरु का काम होता है हुक्म देना और चेले का काम होता है हुक्म को क्रियान्वित करना। लड़का होशियार था। बोला- थोड़ा सोच लेता हूं। दो-चार मिनट सोचकर उसने जवाब दिया- बाबाजी! गुरु बनाओ तो मैं बन जाऊं, चेला तो नहीं बनूंगा।"

इस प्रकार की अधिकार की भावना, नाम-ख्याति की कामना उस साधक में नहीं रहती अथवा दुर्बल हो जाती है जिसने अपने आपको 'विनय' की आंच से तपाया है।

आगम-साहित्य में विनय सात प्रकार विज्ञप्त हैं- ज्ञान विनय, दर्शन विनय, चारित्र विनय, मन विनय, वाक् विनय, काय विनय, लोकोपचार विनय।

ज्ञान विनय

ज्ञान विनय के पांच प्रकार हैं- आभिनिबोधिकज्ञान विनय, श्रुतज्ञान विनय, अवधिज्ञान विनय, मनः पर्यवज्ञान विनय, विनय। मति आदि ज्ञान के प्रति श्रद्धा, भक्ति, बहुमान का प्रयोग ज्ञान विनय है। ज्ञानियों के प्रति अनाशातना-नम्रता का भाव, ज्ञानाभ्यास में विधियुक्तता का प्रयोग भी ज्ञान विनय के अन्तर्गत आ सकता है।

दर्शन विनय

दर्शन विनय के दो प्रकार हैं- शुश्रूषणा विनय और अनत्याशातना विनय। शुश्रूषणा विनय के अनेक प्रकार हैं, जैसे- सत्कार, सम्मान कृतिकर्म, अभ्युत्थान आदि-आदि।

अनत्याशातना विनय के पैंतालीस प्रकार हैं- अर्हत्, अर्हत् प्रज्ञप्त धर्म, आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, कुल, गण, संघ, क्रिया, सम्भोजी, आभिनिबोधिक आदि ज्ञानपञ्चक- इन पन्द्रह की आशातना न करना, इन पन्द्रह के प्रति भक्ति बहुमान का प्रयोग तथा इन पन्द्रह का वर्णसंज्वलन गुणवर्ण इस प्रकार १५ x ३ = ४५ प्रकार होते हैं। ये पैंतालीस प्रकार भगवती व्याख्या प्रज्ञप्ति के आधार पर प्रज्ञप्त हैं। विभिन्न आगमों एवं दिगम्बर साहित्य में तैंतीस आशातना के अनेक वर्गीकरण मिलते हैं। समवाओ में आशातना के तैंतीस प्रकार मिलते हैं। वे शैक्ष (नवदीक्षित या दीक्षापर्याय में छोटा मुनि) को रात्निक (दीक्षा पर्याय में बड़ा मुनि) के साथ किस प्रकार का व्यवहार वर्जित रखना चाहिए, इसका बोध प्रदान करने वाले हैं। इन्हें 'व्यवहार बोध' या 'व्यवहार प्रशिक्षण' कहा जा सकता है। इस संदर्भ में आशातना का भावार्थ होता है अशिष्ट या असभ्य व्यवहार। रात्निक से सटकर, आगे और बराबर चलना। इसी प्रकार सटकर, आगे और बराबर खड़ा होना, चलना आदि। इस तरह तैंतीस आशातनाएं हैं।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री माणकचंदजी (ताल) दीक्षा क्रमांक : 99

मुनिश्री बड़े तपस्वी थे। तप के साथ विविध अभिग्रह भी धारण करते। आपने बहुत तपस्या की। बड़े थोकड़ों की तालिका इस प्रकार मिलती है- 75/3,76/1,90/5 इसके अतिरिक्त भी अनेक तपस्या मुनिश्री ने की। अन्त में एक मुहूर्त के संथारे में उनका प्रयाण हो गया।

– साभार: शासन समुद्र –

जुलाई 2024 सप्ताह के विशेष दिन

19 जुलाई
आचार्यश्री भिक्षु 299वां जन्म दिवस व 267वां बोधि दिवस

20 जुलाई
भगवान वासुपूज्य निर्वाण कल्याणक एवं चातुर्मासिक पक्खी

21 जुलाई
265वां तेरापंथ स्थापना दिवस

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।
-आचार्य श्री महाश्रमण

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

रक्तदान शिविर के विविध आयोजन

राजाजीनगर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशानुसार तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर के तत्वावधान में राउंड ईयर ह्यूमैनिटी थीम 2024 एवं विश्व रक्तदाता दिवस के उपलक्ष्य में वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ श्रीरामपुरम के सहयोग से श्रीरामपुरम स्थानक में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

रक्तदान शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की गई। ब्लड बैंक के सहयोग से कुल 19 यूनिट रक्त का संग्रह हुआ।

तेयुप राजाजीनगर अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। शिविर को सुव्यवस्थित आयोजन करने में एमबीडीडी प्रभारी सुनील मेहता, संयोजक चेतन मांडोत एवं अजीत गांधी का अथक श्रम नियोजित हुआ।

दिनहाटा

विश्व रक्तदाता दिवस के अवसर पर दिनहाटा सब डिविजनल अस्पताल ब्लड बैंक द्वारा तेरापंथ युवक परिषद, दिनहाटा को रक्तदान के क्षेत्र में अमूल्य योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

तिरुपुर

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद तिरुपुर द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। ब्लड बैंक के रूप में आधार हॉस्पिटल की टीम उपस्थित रही। शिविर में कुल 62 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। परिषद् अध्यक्ष एवं उपस्थित कार्यकारिणी सदस्यों ने आधार हॉस्पिटल, एमबीडीडी प्रभारी हेमंत जैन, एमबीडीडी सह प्रभारी अमन चोरड़िया का सम्मान किया।

मदुरै

तेरापंथ युवक परिषद मदुरै एवं तमिलनाडु टेक्सटाइल एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में ब्लड डोनेशन कैम्प का अयोजन तमिलनाडु टैक्सटाइल मर्चेंट एसोसिएशन में किया गया जिसमें कुल 22 यूनिट रक्त संग्रह किया गया।

कैम्प में राजाजी गवर्मेन्ट हॉस्पिटल की टीम ने अपनी सेवाएं प्रदान की। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के तौर पर मदुरै सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के रीजनल ऑफिस से सीनियर मैनेजर संजय जैन विशेष रूप से उपस्थित थे। इस कैम्प के सफल आयोजन में तेयुप साथियों की भूमिका रही।

कटक

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद कटक द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत एक वृहद ब्लड कैंप का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन काठगड़ा साही कटक में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुयी। भीषण गर्मी के मौसम में रक्त की कमी को देखते हुए कटक सेंट्रल रेड क्रॉस सोसाइटी के साथ मिलकर हुए इस आयोजन में कुल 83 यूनिट ब्लड संग्रह हुआ।

कार्यक्रम को सफल बनाने में भवन समिति, तेरापंथी सभा, महिला मंडल, अणुव्रत समिति, किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं परिषद के साथियों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। सभी के प्रति परिषद के अध्यक्ष विकास नौलखा की ओर से आभार व्यक्त किया गया।

परिषद द्वारा आयोजित अन्य कार्यक्रम ज्योतिष और वास्तु कार्यशाला में श्रीडूंगरगढ़ से पधारे मूलचंद लालवानी द्वारा लगभग 20व्यक्तियों को निःशुल्क परामर्श दिया गया। रक्तदान संयोजक अरिहंत चौरडिया, उपाध्यक्ष शशि चौरडिया, मंत्री चिराग जैन एवं नरेश सिंघी का विशेष परिश्रम लगा। आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष विकास चोरडिया द्वारा किया गया।

विसर्जन से होता है अनासक्त चेतना का जागरण

गंगाशहर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर द्वारा आचार्यश्री तुलसी की पुण्यतिथि विसर्जन दिवस के रूप में साध्वी चरितार्थप्रभाजी एवं साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में मनाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत मंडल की बहनों ने तुलसी अष्टकम के द्वारा की।

साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी ने स्वयं आचार्य पद का विसर्जन कर अपने युवाचार्य को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। यह उनकी पद के प्रति अनासक्त चेतना का ज्वलंत उदाहरण है और सभी धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं के लिए अनुकरणीय है।

'तुलसी के अवदान, है बड़े महान' पर तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा शानदार नाट्य प्रस्तुति दी गई जिसमें गुरुदेव तुलसी द्वारा दिए गए अनेकों अवदानों में से कुछ अवदान - अणुव्रत, नया मोड़, ज्ञानशाला, आगम संपादन, समण श्रेणी, महिला मंडल स्थापना को दर्शाया गया। इसी उपक्रम में 'मौलिकता रहे सुरक्षित, परिवर्तन सदा अपेक्षित' विषय पर भाषण प्रतियोगिता रखी गई जिसमें 10 प्रतियोगियों ने भाग लिया। महात्मा गांधी गवर्नमेंट स्कूल उदयरामसर के प्रिंसिपल रतनलाल छल्लानी और चोपड़ा स्कूल गंगाशहर के रिटायर्ड प्रिंसिपल प्रदीप लोढ़ा ने निर्णायक की भूमिका निभाई।

सुनीता पुगलिया, दीप्ति लोढ़ा, संगीता बोथरा ने सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी का स्थान प्राप्त किया। अध्यक्ष संजू लालाणी, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य ममता रांका ने अपने विचार रखें। कार्यक्रम का संचालन मंत्री मीनाक्षी आंचलिया द्वारा किया गया।

आधुनिक तेरापंथ के महान निर्माता थे गुरुदेव श्री तुलसी

जयपुर।

'शासनगौरव' साध्वी कनकश्रीजी के पावन सान्निध्य में गुरूदेवश्री तुलसी का 28वां महाप्रयाण दिवस तेरापंथी सभा जयपुर के तत्त्वावधान में विधाधर नगर के तुलिप कॉम्पलेक्स स्थित बैंगाणी निवास में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का प्रथम चरण "विनयांजलि समर्पण" का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा समुच्चारित नमस्कार महामंत्र से हुआ। नन्हीं बालिका भूमिका बैंगानी ने "तुलसी अष्टकम्" का संगान किया।

बहुश्रुत परिषद् की सदस्या साध्वी कनकश्रीजी ने गुरूदेवश्री तुलसी के विराट व्यक्तित्व की अभिवंदना करते हुए कहा गुरूदेव मल्टी डाइमेंशनल व्यक्तित्व के धनी थे। वे विकास पुरूष, ज्योति पुरूष, शक्ति पुरूष और क्रांतिकारी संत थे। वे आधुनिक तेरापंथ के महान निर्माता थे। गुरूदेव के कालजयी अवदानों तथा उनके सान्निध्य में बीते मधुर पलों के अनुभव साझा करते हुए साध्वीश्री ने कहा- कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो हमेशा हमारे आसपास रहते हैं। वे कभी व्यक्ति के रूप में प्रत्यक्ष प्रेरणा देते हैं तो कभी विचारों के रूप में। मुझे लगता है गुरूदेव श्री तुलसी आज भी विविध रूप में हमारे बीच उपस्थित हैं।

साध्वी मधुलताजी ने गुरूचरणों में अपनी भावांजलि समर्पित करते हुए कहा गुरूदेव एक स्वप्नदर्शी और सृजनशिल्पी आचार्य थे। अपने हर सपने को सच में बदलने के लिए वे अपनी सोच के वातायन सदा खुले रखते थे। अपने अथक परिश्रम से उन्होंने संघ और समाज को अछूती ऊँचाइयां दी। साध्वी वृंद ने भावपूर्ण गीतिका को समवेत स्वरों में प्रस्तुत दी। इस अवसर पर महिला मंडल सी-स्कीम की युवती बहनों ने मधुर स्वरांजलि समर्पित की। तेरापंथी सभा अध्यक्ष शांतिलाल गोलछा, मंत्री सुरेन्द्र बैंगाणी, अभातेममं कार्यसमिति सदस्य अलका बैद एवं संघसेवी संपत गांधी के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। सुनील लूणिया ने गीत के माध्यम से अभ्यर्थना की। प्रथम चरण के कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी समिति प्रभाजी ने किया।

महाप्रयाण समारोह के दूसरे चरण "आराधना आराध्य की" के अंतर्गत साध्वीश्री की विशेष प्रेरणा से अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास एकासन, विगय वर्जन, द्रव्य सीमा आदि के रूप में तय-त्यागमयी भेंट आराध्य-चरण में समर्पित की।

रात्रिकालीन अंतिम चरण में "भक्ति भजन संध्या" आयोजित हुई। साध्वीवृंद एवं भाई-बहनों ने भक्ति गीतों के माध्यम से श्रद्धा-भक्ति के सुनहरे रंगों के साथ वातावरण को तुलसीमय बना दिया।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

लिलुआ।

मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य में 'संभाले रिश्तों की डोर' व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन लिलुआ में तेरापंथ युवक परिषद् लिलुआ (बाली-बेलूर क्षेत्र) द्वारा किया गया। मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा - इंसान के जन्म के साथ ही रिश्तों का शुभारंभ हो जाता है। बढ़ती उम्र के साथ रिश्तों की डोर द्रौपदी के चीर की तरह लंबी होती चली जाती है। रिश्ते नाजुक धागे की तरह होते हैं जिन्हें बड़ी सावधानी से संभालना होता है। रिश्तों को संभालने के लिए कहना, रहना और सहना सीखें। जहाँ अनेक व्यक्ति साथ रहते हैं वहाँ सहिष्णुता वातावरण को स्वर्ग सा सुन्दर बना देती है।

मुनि परमानंदजी ने अपने वक्तव्य में कहा- जहाँ सेवा और सहयोग की भावना होती है वहाँ रिश्ते संभल जाते हैं। संभले हुए रिश्ते इंसान के जीवन को सुख-शांतिमय बनाते हैं। मुनि कुणालकुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

मुख्य वक्ता गौतम दुगड़ ने कहा - जहाँ वाणी का संयम नहीं होता वहाँ रिश्ते संभालना बहुत मुश्किल हो जाता है। रिश्तों को दूरियां बढ़ाने में मोबाईल का भी योगदान हो सकता है। इसलिए इसके अति प्रयोग से बचना चाहिए। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ।

स्वागत भाषण तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष संदीप दुधेड़िया ने दिया। तेरापंथ किशोर मंडल ने गीत का संगान किया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अनिल जैन ने अपने विचार व्यक्त किये।

तेरापंथ महिला मंडल के विविध आयोजन

राजराजेश्वरी नगर

तेरापंथ महिला मंडल राजराजेश्वरी नगर, बेंगलुरू के तत्वावधान में कन्यामंडल द्वारा साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में 'एक्सप्लोर वन्स टैलेंट' शिविर का आयोजन किया गया जिसमें संपूर्ण बेंगलुरु की कन्या मंडल शाखाओं ने भाग लिया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी उदितयशा जी द्वारा किया गया। उन्होंने रोचक कहानी द्वारा लाइफ में बैलेंस बनाकर चलने की प्रेरणा दी। अध्यक्ष सुमन पटवारी ने सभी का स्वागत किया। साध्वी संगीतप्रभा जी ने एक्सप्लोर योर टू टैलेंट गीत के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। साध्वी भव्ययशा जी ने एक चार्ट के माध्यम से कन्याओं को जीवन में समय के समुचित उपयोग का प्रशिक्षण दिया। साध्वी संगीतप्रभा जी ने कन्याओं को यह प्रेरणा दी कि हमें पहले बड़े लक्ष्य को पूरा करना चाहिए। साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने लीड योर सेल्फ द्वारा खुद को जानने और समझने की प्रेरणा दी। सभी कन्याओं को सामायिक, डिजिटल त्याग, 24 तीर्थंकर प्रतियोगिता, डिबेट आदि के माध्यम से धार्मिक गतिविधियों से जुड़ने की प्रेरणा दी गई। शिविर में कुल 47 कन्याओं ने भाग लिया।

महिला मंडल सहित 70 लोगों की उपस्थिति रही। डिबेट प्रतियोगिता के जज के रूप में प्रतिभा नाहर एवं प्रतिष्ठा प्रियदर्शिनी जैन ने अपना निर्णय दिया जिसमें प्रथम स्थान पर विजयनगर कन्या मंडल, द्वितीय स्थान पर यशवंतपुर कन्या मंडल तथा तृतीय स्थान पर आर.आर. नगर कन्या मंडल रहा। कार्यक्रम के अंत में कन्याओं ने शिविर के अपने अनुभव को साझा किया। कन्या मंडल प्रभारी पूनम दुगड़ ने संचालन एवं सहप्रभारी निशा छाजेड़ ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम की संयोजिका दिया छाजेड़ एवं सह-संयोजिका तृप्ति छाजेड़ के नेतृत्व में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

तिरुप्पुर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल तिरुपुर की आयोजना में गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के 28वें महाप्रयाण दिवस को 'विसर्जन दिवस' के रूप में मुनि रश्मिकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, तिरुपुर में मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ तुलसी अष्टम से किया गया। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के संगान के पश्चात सभी भाई-बहनों द्वारा सामूहिक जप किया गया। अध्यक्षा नीता सिंघवी ने सभी का स्वागत किया। मुनि रश्मिकुमारजी ने कहा कि गणाधिपति पूज्य गुरुदेव तुलसी स्वयं विसर्जन के प्रतीक थे। उन्होंने अपने जीवन में आचार्य पद का विसर्जन कर समाज के सामने बहुमूल्य उदाहरण पेश किया। विसर्जन के अनेक रूप हैं- हमें अपनी बुराइयों का, कषायों का, ममत्व का विसर्जन करना है।

हमें अपने भीतर अनासक्ति के भावों को लाना है और अपनी चेतना का विकास करना है। मुनि प्रियांशुकुमारजी ने कहा कि विसर्जन केवल पद का नहीं होता, अपनी बुराइयों का त्याग करना, मस्तिष्क में चल रहे बुरे विचारों को छोड़ना भी विसर्जन ही कहलाता है। कार्यक्रम का कुशल संचालन व आभार ज्ञापन मंत्री प्रीति भंडारी ने किया।

राउरकेला

तेरापंथ महिला मंडल राउरकेला द्वारा आचार्यश्री महाश्रमणजी का 50वां दीक्षा कल्याण महोत्सव समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञाजी, समणी करुणाप्रज्ञाजी, समणी सुमन प्रज्ञाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में मनाया गया। मुमुक्षु नूपुर ने अपने संस्मरण सुनाए। गुरु की अभ्यर्थना मधुर गीतिकाओं, कविताओं द्वारा की गई और ज्ञानशाला के बच्चों ने भी आकर्षक प्रस्तुति दी। ज्योति भंसाली ने आचार्य संपदा के बारे में जानकारी दी। सभा अध्यक्ष रूपचंद बोथरा एवं महिला मंडल की अध्यक्षा तरुलता जैन ने सभी का स्वागत किया। समणी करुणाप्रज्ञा जी ने मंच संचालन किया।

'मेरा परिवार-मेरी जिम्मेदारी' कार्यशाला का विविध आयोजन

बाली बेलुर

मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य में 'मेरा परिवार मेरी जिम्मेदारी' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल बाली-बेलूर द्वारा अशोका विहार में किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा - मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह समाज में जीता है। समाज की सबसे छोटी ईकाई परिवार है। जिसे चारों ओर से स्वीकार किया जाए उसका नाम परिवार है। परिवार समूह चेतना का प्रतीक है। परिवार की रक्षा करना सबकी जिम्मेदारी होती है। परिवार में सौहार्द बना रहे, खुशहाली छाई रहे उसके लिए परिवार के सदस्य एक-दूसरे के सुख-दुःख में साथ रहें, एक-दूसरे को सहयोग करें। अनाग्रह चेतना के विकास से घर में शांति का साम्राज्य स्थापित होता है। जहाँ आग्रह होता है वहां टूटन-विघटन की संभावना रहती है। मुखिया परिवार के सदस्यों में उत्साह का संचार करे, प्रेरणा भरे, गलत को प्रश्रय न दे और किसी को गौण न करे। इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा विनय और वात्सल्य की बुनियाद पर ही सुखी परिवार की इमारत खड़ी की जा सकती है। बदलते परिवेश में पारिवारिक सदस्यों में परस्पर संवादहीनता बढ़ती जा रही है जो परिवार की सुख-शांति को नुकसान पहुंचा रही है। इसलिए सुखी परिवार के लिए परस्पर संवाद को बनाए रखना बहुत जरूरी है। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंगल के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण अध्यक्षा कनक डाकलिया ने दिया। कुसुम सिंघी एवं संपत बरमेचा ने विचार व्यक्त किये।

आभार ज्ञापन ऊजाला सेठिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

रिसड़ा

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार 'मेरा परिवार मेरी जिम्मेदारी' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल रिसड़ा व हिंदमोटर के संयुक्त तत्वावधान में रिसड़ा तेरापंथ सभा भवन में हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज की महत्त्वपूर्ण ईकाई है परिवार। परिवार एक बगीचा है जिसमें नाना प्रकार के रंग-बिरंगे फल फूल होते हैं।

परिवार का अर्थ है जहां सुख-दुःख एक साथ भोगे जाते हैं। प्रत्येक सदस्य की जिम्मेदारी होती है कि परिवार को सुचारू ढंग से चलाए जिससे घर की व्यवस्था अच्छी तरह से संपादित हो सके और घर में शांति का माहौल बना रहे। मुनिश्री ने आगे कहा- परिवार को समृद्ध व सुखी बनाने के लिए सहिष्णुता, समर्पण, श्रद्धा व सेवा सहयोग का भाव रहे। घर को फर्नीचर से नहीं, प्रेम, विनय और सहनशीलता के गुलदस्तों से सजाएं। मुनि कुणालकुमारजी ने मधुर गीत का संगान किया। मंगलाचरण रिसड़ा व हिंदमोटर की बहनों ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल रिसड़ा की अध्यक्षा सुनीता सुराणा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

तेरापंथ महिला मंडल रिसड़ा की उपाध्यक्ष विनोद देवी दुधोडिया, विनीता घोड़ावत एवं तेरापंथ महिला मंडल हिंदमोटर की कोषाध्यक्ष बबीता भरुट व वैशाली पिंचा ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल हिंदमोटर व रिसड़ा की बहनों ने सामूहिक गीत प्रस्तुत किया।

कार्यशाला का संचालन मधु मणोत ने किया। आभार ज्ञापन तेरापंथ महिला मंडल, रिसडा की मंत्री ललीता छाजेड़ ने किया।

'समर्पण' कार्यकर्ता सम्मान कार्यक्रम का आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथ युवक परिषद हैदराबाद द्वारा 'समर्पण' - कार्यकर्ता सम्मान कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन डी. वी. कॉलोनी सिकंदराबाद में किया गया। अध्यक्ष निर्मल दूगड़ ने सभी सदस्यों का स्वागत किया, वर्षभर के कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी और सभी का आभार जताया।

उन्होंने कहा कि संस्था को निरंतर अपनी सेवाएं देकर कार्यकर्ता एक नई ऊंचाई पर लेकर जाते हैं और तेरापंथ युवक परिषद के त्रिआयामी सूत्र युवकों को समर्पण भाव से सेवा करने की प्रेरणा देते हैं।

इस कार्यक्रम में तेयुप के सेवा प्रकोष्ठ, परामर्शक, अभातेयुप सदस्यगण, विशेष सहयोगी, पदाधिकारी गण और सभी कार्यकर्ताओं का स्वागत एवं सम्मान किया गया। अंत में मंत्री रवि प्रकाश कोटेचा ने आभार व्यक्त किया। मंच संचालन संगठन मंत्री जिनेंद्र बैद द्वारा किया गया।

मास्टरिंग द डिजिटल मार्केटप्लेस कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद। तेरापंथ महिला मंडल व कन्यामंडल, हैदराबाद द्वारा 'मास्टरिंग द डिजिटल मार्केटप्लेस' कार्यशाला तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में आयोजित हुआ।

नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। अध्यक्ष कविता आच्छा ने स्वागत वक्तव्य दिया। ज़ॉनल ट्रेनर खुशाल भंसाली व ज़ॉनल ट्रेनर प्रांजल दुगड ने अलग-अलग एक्टिविटीज़ के माध्यम से डिजिटल मार्केटिंग, एडवरटाइजिंग, ऑनलाइन सेलिंग आदि विषय पर प्रकाश डाला।

कुशल संचालन व आभार ज्ञापन सुशीला मोदी ने किया। कार्यशाला की संयोजिका प्रियंका बागरेचा व वर्षा दुगड थी।

गुरु आशीर्वाद को ओज आहार मानकर करें संघ प्रभावक कार्य

गंगाशहर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गंगाशहर की नवगठित कार्यकारिणी का शपथग्रहण समारोह शांति निकेतन में साध्वी चरितार्थप्रभाजी एवं साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। तेरापंथी सभा के निवर्तमान अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने नवगठित टीम को पद व संविधान की शपथ दिलवाई।

जतन लाल छाजेड़ ने अध्यक्ष, नवरतन बोथरा व पवन छाजेड़ ने उपाध्यक्ष, जतन लाल संचेती ने मंत्री, मांगीलाल लुणिया ने सह मंत्री, रतनलाल छलाणी ने कोषाध्यक्ष व शांतिलाल पुगलिया ने संगठन मंत्री के पद की शपथ ग्रहण की। अध्यक्ष जतन लाल छाजेड़ ने परामर्शक, कार्यकारिणी सदस्यों व विशिष्ट सदस्यों की घोषणा की। निवर्तमान अध्यक्ष अमरचंद सोनी द्वारा नवनिर्वाचित अध्यक्ष जतन लाल छाजेड़ को दायित्व हस्तांतरण किया गया। इस अवसर पर साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने कहा कि जहां संगठन होता है, वहां संविधान होता है। संविधान की प्रक्रिया में संगठन में नए-नए व्यक्ति आगे आते हैं व समाज में कार्य करते हैं। उन्होंने विकास के गुर देते हुए गुरु दृष्टि की आराधना करने के लिए प्रेरित किया।

साध्वी प्रांजलप्रभाजी ने कहा कि गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पित होने पर प्रगति का मार्ग स्वतः ही प्रशस्त हो जाता है, सारे कार्य सिद्ध हो जाते हैं। गुरु के आशीर्वाद को ओज आहार मानकर निरंतर संघ प्रभावक कार्य करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि बीकानेर की महापौर सुशीला कंवर राजपुरोहित ने युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की महिमा गान करते हुए कहा कि जतन लाल छाजेड़ को ऐसे महान गुरु, साधु-साध्वियों तथा धर्मसंघ की सेवा करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है।

तेरापंथी महासभा के संरक्षक व तेरापंथ न्यास के ट्रस्टी लूणकरण छाजेड़, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष हंसराज डागा, तेरापंथी महासभा कार्यकारिणी सदस्य भैरूदान सेठिया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा संजू लालाणी, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अरुण नाहटा, अणुव्रत समिति सहमंत्री मनोज छाजेड़, विक्रम सिंह राजपुरोहित ने अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का सफल संचालन रतनलाल छलाणी ने किया।

सभी संस्थाएं मिलकर करें कार्य

गुवाहाटी।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी (सत्र 2024-26) एवं तेरापंथ युवक परिषद, गुवाहाटी (सत्र 2024-25) का शपथ विधि समारोह भगवान महावीर धर्मस्थल में जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। सभा गीत एवं विजय गीत का संगान विनीत चिंडालिया एवं साथियों ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन एवं स्वागत भाषण सभाध्यक्ष बजरंगकुमार सुराणा ने दिया तथा नवनिर्वाचित अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलवाई। तत्पश्चात उपाध्यक्ष पवन जम्मड़ व रायचन्द पटावरी, मंत्री राजकुमार बैद, सहमंत्री राकेश जैन व अशोक बोरड़, कोषाध्यक्ष छत्तरसिंह भादानी व संगठन मंत्री बिनोद बोरड़ को महासभा के उपाध्यक्ष विजय चोपड़ा ने तथा 42 सदस्यीय कार्यकारिणी सदस्यों को सभा के चुनाव अधिकारी मनोज नाहटा ने शपथ ग्रहण करवाई।

तेयुप अध्यक्ष जयंत सुराणा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष सतीश भादानी को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। तत्पश्चात उपाध्यक्ष विकास नाहटा व नवीन भंसाली, मंत्री पंकजसेठिया, सहमंत्री गौतम बैद व राहुल नाहटा, कोषाध्यक्ष मुकेश बरड़िया तथा संगठन मंत्री अंकुश महणोत को तेयुप चुनाव अधिकारी सुशील डागा ने शपथ दिलाई। साथ ही समस्त कार्यकारिणी सदस्यों को पूर्व अध्यक्ष एवं टीपीएफ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल कोटेचा ने शपथ दिलवाई।

दोनों संस्थाओं ने नवनिर्वाचित अध्यक्षों को कार्यभार हस्तांतरित किया। तत्पश्चात मुनिवृंद ने अपने वक्तव्य में सभी से समाज में समन्वय का परिचय देने एवं सभी संस्थाओं के साथ मिलकर कार्य करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर नवनिर्वाचित सभाध्यक्ष बाबूलाल सुराणा एवं तेयुप नवनिर्वाचित अध्यक्ष सतीश भादानी का विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों ने स्वागत-अभिनंदन किया।

कार्यक्रम का संचालन सभा के कार्यकारिणी सदस्य राजेश जम्मड़ ने किया। धन्यवाद ज्ञापन नव मनोनीत मंत्री राजकुमार बैद ने किया।

युवक है समाज की शक्ति और सामर्थ्यवान धरोहर

हासन। तेरापंथ युवक परिषद हासन द्वारा आयोजित 'युवा संवाद' कार्यक्रम के अन्तर्गत मुनि मोहजीतकुमारजी ने कहा कि युवक समाज की शक्ति और सामर्थ्यवान धरोहर है जिसका उपयोग संघ और समाज के उत्थान में किया जा सकता है। इसके लिए वह किसी महान व्यक्ति को जीवन का आदर्श बनाएं। अपनी योग्यता का आकलन स्वयं करें। प्रत्येक युवक अपने जीवन में सफलता को प्राप्त करना चाहता है। इस हेतु उसके हृदय में सरलता, मन में कोमलता, स्वभाव में शीतलता हो तब ही वह हर क्षेत्र में सफल बन सकता है।

मुनि भव्यकुमार जी ने युवकों के व्यक्तित्व को निखारने के चार जीवन मानक को प्रकट करते हुए कहा कि प्रत्येक युवक में चरित्रबल, विश्वास बल, समर्पण बल और पुरुषार्थ बल सुदृढ़ होना चाहिए। मुनि जयेशकुमार जी ने कहा कि युवा पहला संवाद स्वयं से स्थापित करे कि वह कौन है और जिन्दगी में क्या हासिल करना चाहता है? जो व्यक्ति सपने को संकल्प और संकल्प को हकीकत बनाते है ऐसे दृढ़ संकल्पी ही जीवन में महानता का वरण करते हैं।

संचालन युवक परिषद के मंत्री मनीष तातेड़ ने किया। आभार शरत भंसाली ने किया।

संक्षिप्त खबर

ब्लड बैंक्स से भेंट-वार्ता

सूरत। विश्व रक्तदाता दिवस के उपलक्ष्य में तेरापंथ युवक परिषद सूरत द्वारा सूरत क्षेत्र के ब्लड बैंक्स से भेंट-वार्ता की गई। भेंट-वार्ता में सूरत क्षेत्र में रक्त की कमी एवं आगामी वर्ष में होने वाले रक्तदान सम्बन्धी कार्यों पर चर्चा हुई। सभी ब्लड बैंक ने तेयुप सूरत को आदर सहित प्रशंसा पत्र द्वारा सम्मानित किया। सूरत क्षेत्र के दो थैलेसीमिया सेंटर्स 'अतिमजूमदार' (गोपीपुरा) एव 'लोक समर्पण सेंटर' में भी टीम द्वारा भेंट-वार्ता की गई। भेंट-वार्ता में तेयुप-सूरत से अध्यक्ष अभिनंदन गादिया, मंत्री सौरभ पटावरी, निवर्तमान अध्यक्ष सचिन चंडालिया के साथ गौतम दफ्तरी और मनीष परमार की उपस्थिति रही।

संगठन यात्रा में मिली टीपीएफ के कार्यक्रमों की जानकारी

छत्रपति संभाजीनगर। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल और राष्ट्रीय महामंत्री विमल शाह की उपस्थिति में संगठन यात्रा का आयोजन हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने मिशन 1313, महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग, मेंबरशिप ड्राइव, सोशियल नेटवर्किंग और टीपीएफ के विविध कार्यों की बहुत ही सुंदर तरीके से विस्तृत जानकारी प्रदान की। टीपीएफ छत्रपति संभाजीनगर के अध्यक्ष डॉ. आनंद नाहर ने टीपीएफ संभाजीनगर द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी दी और आगे किए जाने वाले कार्यों की रूपरेखा बताई। राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री द्वारा टीपीएफ छत्रपति संभाजीनगर द्वारा किए गए कार्यों की प्रशंसा की गई और आगे के कार्यक्रमों हेतु दिशा-निर्देश दिया गया। संगठन यात्रा में टीपीएफ पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे।

'कनेक्टिविटी इज द बेस्ट एक्टिविटी' कार्यशाला संपन्न

राजराजेश्वरी नगर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद राजराजेश्वरी नगर द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'कनेक्टिविटी इज द बेस्ट एक्टिविटी' का आयोजन साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन राजराजेश्वरी नगर में रखा गया। विजय गीत का संगान तुलसी संगीत सुधा के साथियों द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन संभाग प्रमुख अमित दक द्वारा किया गया। अध्यक्ष बिकाश छाजेड़ ने सभी का स्वागत अभिनंदन किया। साध्वीवृंद ने 'जाग उठो युवा बंधुओं' गीत का जोशपूर्ण संगान किया। साध्वी उदितयशाजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि किसी के साथ कनेक्ट होने से पहले हमें उसे अपनाना पड़ेगा। जब हम किसी को प्रेम व वात्सल्य देकर अपनाएंगे तभी वह हमसे कनेक्ट होगा। साध्वी संगीतप्रभाजी ने 'कनेक्ट विद बेस्ट' के फॉर्मूला को बताते हुए कनेक्ट विद बेनिफिशियल टास्क, कनेक्ट विद एंडलेस एफर्ट, कनेक्ट विद सौल ओरिएंटेड पर्सनालिटी, कनेक्ट विद टॉलरेंस पावर इन चार बिंदुओं के माध्यम से युवकों को लाभान्वित किया। साध्वी भव्ययशाजी ने 'कनेक्टिविटी इज द बेस्ट एक्टिविटी' का विश्लेषण करते हुए कहा कि हमें वास्तव में कनेक्ट होना है वीतराग आत्मा के साथ, संघ के साथ और गुरु के साथ ताकि हमारी तरक्की होती रहे। संभाग प्रमुख अमित दक ने युवकों को समाज से कनेक्ट होने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर सभा, महिला मंडल, युवक परिषद, किशोर मंडल, कन्या मंडल के साथ-साथ श्रावक समाज की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का सफल संचालन मंत्री सुपार्श्व पटावरी ने किया।

❖ बड़ों के प्रति सम्मान का भाव रखना विनय है। समुचित रूप में सबके प्रति विनय का भाव रखना चाहिए।

-आचार्य श्री महाश्रमण

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस पर विविध आयोजन

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी के 28वें महाप्रयाण दिवस को अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित 'विसर्जन दिवस' के रूप में देश भर में तेरापंथ महिला मंडलों के माध्यम से आयोजित किया गया। प्रस्तुत है प्राप्त समाचारों की संक्षिप्त झांकी –

नोखा

'शासनगौरव' साध्वी राजीमतीजी ने कहा कि आचार्य तुलसी एक महान संत और ओजस्वी वक्ता थे। साध्वी पुलकितयशाजी, साध्वी प्रभातप्रभाजी ने गुरुदेव तुलसी की भावों से अभ्यर्थना की। कन्या मंडल ने तुलसी अष्टकम से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तेयुप सदस्यों ने गीतिका का संगान किया। जोरावरपुरा सभा अध्यक्ष बाबूलाल बुच्चा, सुनील बैद, अनुराग बैद, सभा मंत्री मनोज घीया, तेयुप अध्यक्ष निर्मल चोपड़ा, मंत्री सुरेश बोथरा ने अपनी प्रस्तुति दी। युवती मंडल ने विसर्जन करने की प्रेरणा दी। महिला मंडल मंत्री प्रीति मरोठी ने आभार ज्ञापन एवं संचालन अध्यक्ष सुमन मरोठी ने किया।

सुजानगढ़

'शासनश्री' साध्वी सुप्रभाजी के सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। तत्पश्चात कन्या मंडल द्वारा तुलसी अष्टकम के संगान से मंगलाचरण किया गया। साध्वी पल्लवप्रभाजी ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। साध्वी वृंद द्वारा सामूहिक गीत का संगान किया गया। साध्वी मनीषाश्रीजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए आचार्य श्री तुलसी का जीवन वृत्तांत बताया। साध्वी मुकुलयशाजी ने गीतिका द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभाजी ने गुरुदेव तुलसी के अंतिम समय का दृष्टांत बताया। इस अवसर पर महिला मंडल अध्यक्षा राजकुमारी भूतोडिया ने कविता के माध्यम से विचार व्यक्त किए। केसरी चंद मालू, सरोज बैद, सज्जन बोकडिया, निर्मल कोठारी ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। महिला मंडल की बहनों द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का सफल संचालन साध्वी मुकुलयश जी ने किया।

छोटी खाटू

आचार्य श्री तुलसी 20वीं सदी के विलक्षण संत थे, युगीन समस्याओं से लोहा लेने वाले लोह पुरुष थे। गगन की विशालता और सागर की गंभीरता को उपमित करने के लिए कोई उपमा नहीं है वैसे ही आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को किसी भी उपमा से उपमित नहीं किया जा सकता। उपरोक्त विचार 'शासनश्री' साध्वी कमलप्रभाजी ने छोटी खाटू तेरापंथ सभा भवन में समायोजित आचार्य तुलसी महाप्रयाण दिवस एवं पावस प्रवेश पर आयोजित स्वागत कार्यक्रम में अभिव्यक्त किये। साध्वीश्री ने कहा यह स्वागत मेरा नहीं गुरु दृष्टि का हो रहा है। इस अवसर पर महिला मंडल द्वारा सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की गई। तेरापंथ सभा अध्यक्ष डालमचंद धारीवाल, पूर्व अध्यक्ष ताराचंद धारीवाल, महिला मंडल मंत्री पूजा सेठिया, रुचिका जैन, अणुव्रत समिति अध्यक्ष भंवरलाल टाक, मंजू देवी फूलफगर, दीपक बेताला आदि ने आचार्यश्री तुलसी को श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए साध्वीश्री जी का स्वागत भी किया। साध्वी शताब्दीप्रभाजी ने आचार्य श्री तुलसी व अणुव्रत की प्रासंगिकता को बताया। कार्यक्रम का मंगलाचरण गुलाब देवी बैद, आभार ज्ञापन सभा मंत्री राजेश बेताला एवं कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री विकास सेठिया ने किया।

लाडनूं

'शासन गौरव' साध्वी कल्पलताजी के सान्निध्य में जैन विश्व भारती में 'विसर्जन दिवस' का आयोजन तुलसी अष्टकम के सामूहिक संगान से शुरू हुआ। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष सुमन गोलछा ने सभी बहनों का स्वागत किया एवं अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी वृन्द एवं समणी वृन्द ने सामूहिक गीत द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी शशिप्रभाजी, साध्वी तेजस्वीप्रभा एवं समणी प्रणवप्रज्ञाजी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। गायक राजेश, पन्नालाल खटेड़, रेणु कोचर ,राजश्री भुतोड़िया एवं अनिरुद्ध शर्मा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। विसर्जन दिवस पर बहनों ने विभिन्न पदार्थों, इच्छाओं, अहम और कषायों का विसर्जन किया। जमीकंद एवं रात्रि भोजन का त्याग, नवकारसी, पोरसी आदि के प्रत्याख्यान भी किए गए। आचार्य श्री तुलसी की स्मृति में सामूहिक जप किया गया। 'शासन गौरव' साध्वी कल्पलताजी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी क्रांतिकारी पुरुष थे। कार्यक्रम का कुशल संयोजन समणी डॉ. कुसुम प्रज्ञा जी ने किया। तेरापंथ महिला मंडल मंत्री राज कोचर ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर 'मौलिकता रहे सुरक्षित परिवर्तन सदा अपेक्षित' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। निर्णायक की भूमिका शांतिलाल बैद एवं आलोक खटेड़ ने निभाई। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर मंजू बैद, द्वितीय स्थान पर राजश्री भुतोड़िया, तृतीय स्थान पर सुमन नाहटा रही एवं सुनीता बैद, किरण बरमेचा को सांत्वना पुरस्कार मिला।

लाडनूं के ही वृद्ध साध्वी सेवा केंद्र में साध्वी प्रमिलाकुमारीजी के सान्निध्य में भी गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के 28वें महाप्रयाण दिवस को 'विसर्जन दिवस' के रूप में आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र के पश्चात आचार्यश्री तुलसी की स्मृति में सामूहिक जप किया गया। नारी जाति के उन्नायक आचार्यश्री तुलसी की श्रद्धासिक्त अभिवंदना महिला मंडल ने गीतिका के माध्यम से की। साध्वीवृंद की सामूहिक गीतिका, समणी नियोजिका अमलप्रज्ञा जी, साध्वी केवलयशा जी, साध्वी आस्थाश्रीजी, साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी, साध्वी तेजस्वीप्रभाजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल से उपमंत्री राजश्री भूतोड़िया, उपासिका डॉ. सुशीला बाफना, अणुव्रत समिति के संरक्षक शांतिलाल बैद आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। पूर्व मंत्री नीता नाहर एवं वर्तमान मंत्री राज कोचर ने तुलसी जीवन गाथा की संयुक्त प्रस्तुति दी। संयोजन तेरापंथ महिला मंडल लाडनूं की मंत्री राज कोचर ने किया।

उधना

तेरापंथ महिला मंडल उधना के तत्वावधान में तेरापंथ भवन, उधना में विसर्जन दिवस मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए साध्वी हिमश्रीजी ने कहा- आचार्यश्री तुलसी देवदूत बनकर इस धरती पर अवतरित हुए। समूची मानव जाति के कल्याण हेतु उन्होंने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। समाज में व्याप्त कुरूढ़ियों को समाप्त करने हेतु उन्होंने भगीरथ पुरुषार्थ किया। आचार्य श्री तुलसी ने विसर्जन का मंत्र दिया। मनुष्य अर्जन करता है उसके साथ-साथ विसर्जन भी जरूरी है। विसर्जन केवल अर्थ का ही नहीं होता, समय का भी होता है, श्रम का भी होता है और उससे भी अधिक महत्वपूर्ण विसर्जन है अहंकार और ममकार का, आसक्ति, पद और स्वार्थ की चेतना का विसर्जन। आचार्य तुलसी ने त्याग की चेतना के विकास और स्वार्थ की चेतना के विसर्जन का संदेश दिया। उसे हम यदि आत्मसात कर लेते हैं तो हमारा परिवार, समाज और राष्ट्र सुखी और समृद्ध बन सकता है। 'शासन श्री' साध्वी रमावती जी ने कहा- आचार्य तुलसी ने स्वयं अपने आचार्य पद का त्याग किया एवं अपने शिष्य महाप्रज्ञ को आचार्य पद पर आरूढ़ किया। यह जैन इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है और पद के विसर्जन का उत्कृष्ट उदाहरण है। साध्वी मीमांसाप्रभाजी, साध्वी वैराग्यप्रभाजी ने वक्तव्य के माध्यम से एवं साध्वीवृंद द्वारा गीतिका के माध्यम से आचार्य तुलसी को श्रद्धांजलि दी गई। तेरापंथी सभा, उधना के अध्यक्ष निर्मल चपलोत, अणुव्रत विश्व भारती के गुजरात राज्य प्रभारी अर्जुन मेडतवाल आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति की। आभार ज्ञापन तेरापंथ महिला मंडल उधना की मंत्री नीलम डांगी ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मुक्तिप्रभाजी ने किया।

बीदासर

तेरापंथ महिला मंडल बीदासर ने मघवा समवसरण के प्रांगण में केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशाजी के सान्निध्य में 'विसर्जन दिवस' का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत सरलादेवी गंग द्वारा तुलसी अष्टकम् से की गई। सामूहिक जप के पश्चात महिला मंडल द्वारा सुमधुर गीतिका का संगान किया गया। साध्वी कार्तिकयशाजी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी ने, 'मेरा जीवन मेरा दर्शन' पुस्तक में लिखा है- जैसे भगवान महावीर के तीन नाम प्रचलित थे वर्धमान, ज्ञातपुत्र और महावीर, वैसे ही मुनि अवस्था में मेरे भी तीन नाम प्रचलित थे पहला बांसुरी महाराज क्योंकि मैं गीतिका सुंदर गाता था, दूसरा शौकिया महाराज क्योंकि मैं टिप टॉप रहता था और मेरा रंग रूप, चाल ढाल सब हटकर था, तीसरा मास्टर महाराज क्योंकि छोटी अवस्था में ही मेरी पाठशाला चलती थी जिसमें अनेक संत मेरे विद्यार्थी थे। 'शासनश्री' साध्वी विमलप्रभाजी, 'शासनश्री' साध्वी मदनश्रीजी एवं साध्वी वृंद ने सुमधुर गीतिकाओं द्वारा गुरुदेव तुलसी को भावांजलि समर्पित की। 'शासनश्री' साध्वी अमितप्रभाजी, साध्वी जयंतयशाजी, साध्वी अक्षयप्रभाजी एवं साध्वी सिद्धियशाजी ने अपने अभिव्यक्ति दी। शांतिदेवी बांठिया एवं सुमन देवी बैंगानी ने अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन महिला मंडल की मंत्री भावना दूगड़ ने किया। आभार ज्ञापन संपतदेवी बोथरा ने किया।

बेंगलुरु

साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में चामराजपेट के वर्धमान स्थानक में विसर्जन दिवस मनाया गया। महिला मण्डल की बहनों के मंगल संगान से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। साध्वी उदितयशाजी ने अपने वक्तव्य में कहा- दीपावली पर लोग अन्धकार को दूर करने के लिए दीए जलाते हैं लेकिन मानव मन में घिरे ईर्ष्या, अहंकार और लोभ के अन्धकार को मिटाने के लिए तुलसी मानो दूज के दिन एक नई रोशनी लेकर इस धरती पर अवतरित हुए। वे एक विसर्जन कर्ता थे। अधिकारों का विसर्जन और अहंकार का विसर्जन करने के लिए एक आश्चर्यचकित और मानवीय दुर्बलता को झकझोर देने वाला उदाहरण प्रस्तुत किया। साध्वीश्री ने डिजिटल डिटॉक्स के लिए अनेक भाई बहिनों को संकल्पित किया। साध्वी भव्ययशाजी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी एक क्रांतिकारी व्यक्तित्व थे, उन्होंने जो विसर्जन किया वह महान था। हम भी अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं का विसर्जन करें तो हमारा यह आयोजन प्रयोजन को सिद्ध करने वाला बन सकता है। सुरुचि जैन, ऋजु डूंगरवाल एवं ज्योति संचेती ने अपनी अभिव्यक्ति दी। सभा के उपाध्यक्ष ललित मांडोत ने अपने विचार व्यक्त किए। तेयुप सदस्यों ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी संगीतप्रभा जी ने किया।

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस पर विविध आयोजन

आचार्य तुलसी के अवदानों पर व्याख्यान माला का आयोजन

बीकानेर।

परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी के 28वें महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में सात दिवसीय कार्यक्रम आचार्य तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान गंगाशहर द्वारा आयोजित किए गए। कार्यक्रम के चतुर्थ दिन साध्वी चरितार्थप्रभाजी, साध्वी प्रांजलप्रभाजी, डॉ. समणी मंजूप्रज्ञा जी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा जी के सान्निध्य में शांति निकेतन सेवा केन्द्र में 'आचार्य तुलसी के अवदानों पर व्याख्यान माला' कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय विधि एवं न्याय मंत्री एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं के कुलपति अर्जुनराम मेघवाल थे। अपने वक्तव्य में केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी के अनेक संस्मरण हैं, जो उन्हें समय-समय पर प्रेरित करते हैं। उनके साहित्य का मैंने जब भी अवसर मिला, अध्ययन किया और करता रहता हूं। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने आचार्य तुलसी के अवदानों की चर्चा करते हुए समण श्रेणी को आचार्य तुलसी का महान अवदान बताया। जिसके चलते जैन धर्म का विदेशों में प्रचार शुरू हो सका।

साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने कहा कि आचार्य तुलसी के अवदानों को सिर्फ कहने और सुनने तक सीमित ना रखकर जीवन में उतारने की आवश्यकता है। समणी मंजूप्रज्ञा जी ने कहा आचार्य श्री तुलसी श्रम के देवता थे। अपने जीवन की अंतिम श्वास तक वे श्रम का जीवन जीते रहे। इस अवसर पर आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान की ओर से मुख्य ट्रस्टी गणेश बोथरा, अध्यक्ष हंसराज डागा, मंत्री दीपक आंचलिया, निवर्तमान अध्यक्ष महावीर रांका ने अर्जुनराम मेघवाल को तुलसी साहित्य भेंट कर एवं जैन प्रतीक चिन्ह पहनाकर सम्मान किया। कार्यक्रम का संयोजन ममता रांका ने किया। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल द्वारा भी विधि एवं कानून मंत्री का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में सभी संस्थाओं के प्रतिनिधि, समाज के गणमान्यजन और पदाधिकारी उपस्थित थे।

सात दिवसीय आध्यात्मिक कार्यक्रम की शुरुआत प्रेक्षाध्यान शिविर से की गई थी। तीन दिवसीय आवासीय प्रेक्षाध्यान शिविर में देशभर से आए 114 महिलाओं व पुरुषों सहित युवक और युवतियों को प्रेक्षाध्यान की बारिकियां सिखाई गई।

पांचवें दिन आचार्य तुलसी समाधी स्थल के समक्ष आशीर्वाद भवन में प्रबुद्धजन सम्मेलन आयोजित हुआ। साध्वी चरितार्थप्रभाजी एवं समणी डॉ. मंजूप्रभा जी के सानिध्य में 'द मोरल ऑफ द स्टोरी इज मोरालिटी' विषय पर आयोजित व्याख्यान माला में शहर के विभिन्न क्षेत्रों शिक्षा, चिकित्सा, अध्यात्म, साहित्य और अधिवक्ता सहित करीब 250 प्रबुद्धजनों ने भाग लिया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने कहा कि नैतिकता ही जीवन का आदर्श गुण है। अगर जीवन में नैतिकता आ जाए तो जीवन की दिशा ही बदल जाती है। नैतिकता के अभाव में व्यक्ति अपने जीवन की दिशा और दशा दोनों से भटक जाता है।

मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त वंदना सिंघवी ने अपने वक्तव्य में कहा कि जैन कुल में जन्म लेना सौभाग्य की बात है। मुझे प्रारंभ से ही ऐसे संस्कार मिले जिससे मैंने अपने आज तक की 35 वर्ष की राजकीय सेवा में उन नैतिक और मानवीय मूल्यों को बनाए रखा। कार्यक्रम में मंगलाचरण कोमल पुगलिया ने किया। संस्थान की गतिविधियों की जानकारी महामंत्री दीपक आंचलिया ने दी। कार्यक्रम में हंसराज डागा, विनोद बाफना, दीपक आंचलिया, किशन बैद, जेठमल बोथरा ने संभागीय आयुक्त को जैन पताका पहनाकर एवं साहित्य भेंट कर सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन भैरुदान सेठिया ने किया।

अणुव्रत है मानव मात्र के चरित्र निर्माण का उत्तम मार्ग

छापर।

भिक्षु साधना केंद्र छापर के सभागार में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्म संघ के नवम आचार्य श्री तुलसी के 28वें निर्वाण दिवस पर व्यवस्थापक मुनि डॉ. विनोद कुमार जी के सान्निध्य में श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने धर्म संघ को अणुव्रत का अनमोल उपहार दिया जो आज के युग में हिंसा से अहिंसा की ओर ले जाने का सर्वोत्तम उपाय है। यह मनुष्य को तनाव से मुक्त करता है तथा शारीरिक व मानसिक रूप से सशक्त बनाता है। अणुव्रत मानव मात्र के चरित्र निर्माण का उत्तम मार्ग है। अपने शासन काल में आचार्य श्री तुलसी ने धर्म संघ की प्रतिष्ठा के परचम को उच्चतम शिखर प्रदान किया। तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में सूरजमल नाहटा, विमल कुमार बैद, हेमलता दुधोड़िया, प्रिया दुधोड़िया, संजना जैन ने अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का संचालन सरोज देवी भंसाली ने किया। इस अवसर पर छापर के गणमान्य जन व बडी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

आचार्यश्री तुलसी के अवदान आज बन रहे हैं वरदान

तिरुपुर।

तमिलनाडु के तिरुपुर शहर में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के 28वें महाप्रयाण दिवस का आयोजन युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के शिष्य मुनि दीपकुमार जी सान्निध्य में तेरापंथी सभा, तिरुपुर द्वारा किया गया। मुनि दीपकुमार जी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा- आचार्यश्री तुलसी निर्माण के पुरोधा एवं विराट पुंज थे। कितना-कितना कार्य उन्होंने किया, उनके अवदान आज वरदान बन रहे हैं। तेरापंथ के आचार्यों में सबसे अल्पायु में आचार्य वे बने। उन्होंने धर्म संघ में ज्ञान-ध्यान की सुर सुरिता प्रवाहित की, साधु-साध्वियों की शिक्षा पर ध्यान दिया और भारी परिश्रम लगाया। आचार्य तुलसी के जीवन में संघर्ष भी बहुत आए पर उन्होंने सबका साहस के साथ सामना किया। उन्होंने नारी जाति के उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, रूढी उन्मूलन का महान क्रांतिकारी कार्य किया। मुनि काव्यकुमार जी ने संचालन करते हुए कहा- आचार्य श्री तुलसी का भाग्य प्रबल था और पुरुषार्थ में उनका गहरा विश्वास था। उन्होंने जो सोचा और कहा वह करके दिखाया। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा तिरुपुर अध्यक्ष अनिल आंचलिया ने भाव व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल तिरुपुर की बहनों ने गीत का संगान किया। उपासिका मधु कोठारी एवं संतोष आंचलिया ने अपनी प्रस्तुति दी।

सिद्ध पुरुष थे गणाधिपति गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी

उल्हास नगर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के सान्निध्य में गणाधिपति गुरुदेव तुलसी की 28वीं पुण्यतिथि का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनिश्री ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि हमारा सौभाग्य था कि हमें आचार्यश्री तुलसी जैसे युगप्रधान, भारत ज्योति, वाग्पति जैसे महायशस्वी गुरु के शासन काल में जन्म लेने का अवसर प्राप्त हुआ।

आचार्यश्री तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य होते हूए समग्र जैन समाज के उत्थान के लिये ही नहीं विश्वकल्याण के लिए अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, रूढ़ि उन्मूलन जैसे अवदानों से जन कल्याण के लिए जो कार्य किया वह युगों तक उनकी स्मृति कराता रहेगा। आज तेरापंथ महिला मंडल की बहनें उपासक श्रेणी, प्रेक्षा प्रशिक्षिका, ज्ञानशाला से जुड़कर जो अपनी शक्ति का भक्ति का परिचय दे रही है वह प्रशंसनीय ही नहीं औरों के लिए अनुकरणीय भी है।

तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ कन्या मंडल, तेरापंथ किशोर मंडल, ज्ञानशाला, पारमार्थिक शिक्षण संस्थान, समण श्रेणी आगम सम्पादन, जैन भारती, युवादृष्टि, अणुव्रत पत्रिका, प्रेक्षाध्यान, विज्ञप्ति, तेरापंथ टाइम्स, जैन विश्व भारती जैन महान अवदानों ने आपके ही युग में जन्म लिया। आचार्यश्री तुलसी से पूर्व एक साथ तेरापंथ में 31 दीक्षा नहीं सुनी, पंजाब से कन्या कुमारी तक की किसी आचार्य की पैदल यात्रा नहीं सुनी, आचार्यश्री तुलसी ने पदलिप्सित युग में आचार्य पद का विसर्जन करके युग को जो बोध पाठ दिया वह सदा स्मृति पटल पर अंकित रहेगा।

कार्यक्रम में मुनि अमनकुमारजी, मुनि नमिकुमारजी, मुनि मुकेशकुमारजी, ब्रह्मकुमारी आशा दीदी, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रोशन मेहता, गणपत हिंगड़ सहित अनेकों व्यक्तियों ने अपने विचार व्यक्त किए। तेयुप डोम्बिवली ने गीत एवं तेमम अध्यक्षा ने वक्तव्य के माध्यम से अपनी भाभिव्यक्ति प्रस्तुत की।

प्रारम्भ में तुलसी चालीसा का सामूहिक संगान किया गया। भाई-बहनों ने सामायिक, पंचरंगी एवं अन्य संकल्पों के साथ पुण्यदिवस मनाया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि अमन कुमार जी ने किया।

करुणा के महासागर थे गुरुदेव तुलसी

बांद्रा।

साध्वी शकुंतलाकुमारीजी के सान्निध्य में गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के 28वें महाप्रयाण दिवस पर 'ॐ जय गुरुदेव' का जप करवाया गया।

ज्ञानशाला के बच्चों ने तुलसी अष्टकम से गुरुदेव की स्तुति की। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं व महिला मंडल ने मंगल गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा मुंबई के उपाध्यक्ष मुकेश नौलखा ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी शकुंतलाकुमारीजी ने कहा - गाणाधिपति गुरुदेव तुलसी के हृदय में वत्सलता, अंतर्मन में सरलता, होंठों पर पवित्रता, प्रकृति में प्रेमलता और जीवन में परोपकारिता थी। आपने संस्मरणों के माध्यम से कहा- गुरुदेव को वचन लब्धि प्राप्त थी। साध्वी संचितयशाजी ने कहा - गुरुदेव करुणा के महासागर थे, हर भक्त की मनोकामना पूरी करने वाले थे। साध्वी जागृतप्रभाजी ने कविता प्रस्तुत की। साध्वी रक्षितयशा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

गुरुदेव श्री तुलसी के जीवन से प्राप्त करें आध्यात्मिक विकास की प्रेरणा : आचार्यश्री महाश्रमण

जानवे।
24 जून, 2024

आषाढ़ कृष्णा तृतीया, गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी की 28वीं वार्षिक पुण्य तिथि के अवसर पर गुरुदेव तुलसी के परम्पर पट्टधर विशद चरित्र के धनी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भावांजलि अर्पित करते हुए फरमाया कि एक आदमी समरांगण में दस लाख योद्धाओं को जीत लेता है, एक आदमी केवल अपनी आत्मा को जीतता है। शास्त्रकार ने बताया है एक जो अपनी आत्मा को जीतता है, उसकी परम जय होती है। यह अध्यात्म का समरांगण है, जिसमें दूसरों को जीतने की अपेक्षा नहीं केवल अपनी आत्मा को जीतने की बात होती है।

साधु बनना एक प्रकार से अध्यात्म समरांगण में मानो प्रविष्ट हो जाना हो जाता है और एक प्रकार से योद्धा बनने की स्थिति के निर्माण की प्रक्रिया संभवतः शुरू हो जाती है। जीवन में सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान युक्त चारित्र का आना बहुत बड़ी उपलब्धि होती है। आज आषाढ़ कृष्णा तृतीया है, परम वंदनीय गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी का 28वां महाप्रयाण दिवस है। 27 वर्ष पूर्व गंगाशहर के तेरापंथ न्यास वाले भवन में गुरुदेव श्री तुलसी ने अपने जीवन के 83वें वर्ष में अंतिम सांस ली थी।

गुरुदेव तुलसी के जीवन प्रसंगों उल्लेख करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि लोग जब पूछते की पूजी महाराज की उम्र कितनी है? तब मंत्री मुनि मगनलालजी स्वामी फरमाया करते थे कि पूजी महाराज 82 वर्ष के हैं। 60 वर्ष कालूगणी के अनुभव के और 22 वर्ष खुद के, इस प्रकार पूजी महाराज 82 वर्ष के हैं। बाद में वह बात एक अन्य रूप में सत्य हो गयी कि गुरुदेव तुलसी 83 वर्ष पार नहीं कर पाए। गुरुदेव तुलसी ने जब 83वें वर्ष में प्रवेश किया था तब फ़रमाया था - '82 वर्ष तो मंत्री मुनि के कथन अनुसार हो गए, अब जो आगे आएंगे वो मेरे।'

हमारे धर्मसंघ में सबसे कम उम्र (लगभग 22 वर्ष) में युवाचार्य और आचार्य बनने वाले आचार्य तुलसी थे। सबसे लम्बा आचार्य काल भी हमारे धर्मसंघ में गुरुदेव तुलसी का था, लगभग 57 वर्ष के आस-पास रहा। बाद में गणाधिपति के रूप में रहे थे। इस माने में वे हमारे धर्मसंघ में कीर्तिमान आचार्य थे। उन्होंने सुदूर क्षेत्रों की पद यात्रा की। दक्षिण भारत और कोलकाता पधारने वाले प्रथम आचार्य गुरुदेव तुलसी थे। उन्होंने अपने आचार्यकाल में नये-नये उन्मेष धर्मसंघ को प्रदान किये थे, महाश्रमण और महाश्रमणी पद की स्थापना की थी। युवाचार्य के रहते हुए अन्य किसी को महाश्रमण पद देना विशेष बात है। गुरुदेव तुलसी ने मुझे (मुनि मुदित को) अपने श्रीमुख से महाश्रमण के पद पर बिठाया था। पहले युवाचार्य महाप्रज्ञ का अंतरंग सहयोगी भी घोषित किया था। पूर्ववर्ती किसी आचार्य ने इस रूप में ऐसा निर्णय नहीं किया होगा।

आचार्य श्री तुलसी का बाह्य व्यक्तित्व भी आकर्षक था। उनके पूर्व जन्मों की कोई तपस्या रही होगी कि उन्होंने इस प्रकार के गौरवपूर्ण स्थान को प्राप्त किया था। नए उन्मेषों में अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान और फिर समण श्रेणी की स्थापना उनके आचार्य काल में हुयी। तेरापंथ शासन में तो पहला कार्य था कि युवाचार्य महाप्रज्ञजी को आचार्य पद पर स्थापित कर दिया था, अपने आचार्य पद का विसर्जन कर दिया। अपने सामने भावी को वर्तमान बना दिया। इसकी पृष्ठभूमि में कोई कारण रहा होगा। कारण अन्तर में गुप्त होता है, कार्य सामने स्पष्ट होता है। उन्होंने सत्ता का त्याग किया और अपने सामने विधिवत आचार्य महाप्रज्ञ जी को अभिषिक्त कर दिया।

आचार्यश्री तुलसी सक्रिय और पुरुषार्थी व्यक्ति रहे। वे मानो जनता के आदमी थे, ग्रामीण जनता से भी बात कर लेते, राजनेताओं से भी बात कर लेते। कितने राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री उनके उपपात में आते थे। अनेक लोक कल्याणकारी कार्यों का प्रादुर्भाव उनके आचार्य काल में हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में जैन विश्व भारती, पारमार्थिक शिक्षण संस्था आदि की भी स्थापना हुई। पारमार्थिक शिक्षण संस्था आज मुमुक्षुओं का आश्रय स्थल बनी हुई है।

वि.सं. 2054 का चातुर्मास गंगाशहर में घोषित था पर चतुर्मास लगा ही नहीं और चातुर्मास लगने से पहले ही आज के दिन उनका महाप्रयाण हो गया। लाडनूं उनका जन्मस्थान और गंगाशहर में उनका समाधि स्थल नैतिकता का शक्ति पीठ है। गुरुदेव तुलसी के जीवन से हमें प्रेरणाएं मिलती रहे और हम भी धार्मिक, आध्यात्मिक विकास करते रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने मंगल उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि महान व्यक्ति वह होता है जिसका व्यक्तित्व अच्छा, कर्तृत्व अच्छा होता है, वक्तृत्व अच्छा होता है और नेतृत्व अच्छा होता है। इन चारों कसौटियों पर गुरुदेव तुलसी का जीवन खरा था। उनका बाह्य व्यक्तित्व सबको आकर्षित करने वाला था। उनका कर्तृत्व भी प्रभावशाली था। तेरापंथ धर्मसंघ को ऊंचाईयों पर पहुंचाया था। उन्होंने जन हित में अणुव्रत आदि अनेक आयाम दिए।

जान जान को मानवीयता का पाठ पढ़ाने वाले थे। साधु साध्वियों के निर्माण में भी उन्होंने अपनी शक्ति का नियोजन किया। हिंदी का विकास भी गुरुदेव की ही देन है। साध्वियों की क्षमताओं को अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

कल्याणी वाणी सुनने से दूर हो सकती है विषयों के प्रति आसक्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

आनन्द खेड़े ।
27 जून, 2024

तेरापंथ सरताज आचार्यश्री महाश्रमणजी ने धुळे जिले के आनन्द खेड़े गांव स्थित गांधी एण्ड फुले विद्यालय में पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फ़रमाया- प्रश्न किया गया कि प्राणियों को भय किस चीज का लगता है? प्रश्नकर्त्ता ने ही उत्तर दे दिया कि प्राणी दुःखों से भय खाते हैं। जीव स्वयं ही अपने ही प्रमाद के कारण दुःख पैदा करता है। हमारे जीवन में कई बार कठिन स्थितियां भी आ सकती है, हमें उनसे दुःख भी हो सकता है। हो सकता है कई लोग उन स्थितियों में दुःखी न बने तो कई ज्यादा दुःखी भी हो सकते हैं।

पदार्थों व विषयों के प्रति अनुगृद्धि होती है, उससे दुःख पैदा होता है। लोक में जितना भी दुःख पैदा होता है, वह कामानुवृद्धि से होता है। आसक्ति, मोह, लालसा, तृष्णा आदि क्षीण हो जाएं तो दुःख कम हो सकते हैं। दुःख शारीरिक भी हो सकते हैं और मानसिक भी हो सकते हैं। जरा और शोक दोनों प्रकार के कष्टों से छुटकारा मिल जाए, आठों कर्मों से मुक्त होकर जीव मोक्ष में चला जाए तो पूर्णतया दुःखों से छुटकारा मिल सकता है।

सारे दुःखों का कारण मोहनीय कर्म है, हम मोहनीय कर्म को क्षीण करने का प्रयास करें। पदार्थों का त्याग करें, भीतर से आकांक्षा को छोड़ें। अनुप्रेक्षा व प्रवचन-सत्संग भी आसक्ति को कम करने में सहायक बन सकते हैं। ज्ञान मिले और संवेग जाग जाए तो आसक्ति कम हो सकती है। त्यागी अणगार मुनि के सत्संग से कभी प्रेरणा मिल सकती है और जीवन की दशा और दिशा बदल जाती है। धर्म ग्रन्थों को पढ़ते-पढ़ते भी विरक्ति की भावना, अनासक्ति की भावना का विकास हो सकता है।

त्यागी संतों का प्रवचन रोज सुनते रहना चाहिए। उनकी वाणी से भीगते-भीगते ऐसी स्थिति बन सकती है कि इस जन्म में नहीं तो आगे के जन्म में कोई अच्छा रास्ता मिल सकता है। धर्म को सुनने का मौका नहीं गंवाना चाहिये। साधु की कल्याणी वाणी दूसरों का कल्याण करने में निमित्त-सहायक बन सकती है। विषयों के प्रति जो आसक्ति होती है वह अच्छी बातें सुनने से दूर हो सकती है और मनुष्य की चेतना ऊर्ध्वगामी बन सकती है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में विद्यालय की अध्यापिका रजनी महाजन एवं खेड़े श्रीसंघ की ओर प्रदीप चतुरमूथा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

स्वयं की आत्मा को न बनने दें दुरात्मा : आचार्यश्री महाश्रमण

फागणे।
25 जून, 2024

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में अनन्त-अनन्त आत्माएं हैं। उन आत्माओं को चार भागों में बांटा जा सकता है- परमात्मा, महात्मा, सदात्मा और दुरात्मा।

परमात्मा वे आत्माएं हैं जो मोक्ष में जा चुकी हैं, सिद्धत्व को प्राप्त हो चुकी हैं। जो केवली हो गए हैं, उनको भी परमात्मा माना जा सकता है। संसार में जो उच्च कोटि की आत्माएं हैं वे महात्मा हैं। छठे गुणस्थान से लेकर चौदहवें गुणस्थान के सारे जीव एक दृष्टि से साधु हैं, महात्मा हैं। जो साधु तो नहीं है, पर साधु के सिवाय जितने भी सम्यक् दृष्टि जीव हैं, व्यवहार में जो लोग सज्जन हैं, वे सदात्मा हैं। तात्विक दृष्टि से जो पहले गुणस्थान में हैं, वे सब दुरात्मा हैं। हत्या-डकैती करने वाले मनुष्य दुरात्मा की कोटि में लिए जा सकते हैं।

महात्मा बनना सबके लिए संभव नहीं है। धन्य हैं वे जो साधु बन गए हैं। जो महात्मा हैं उनके मन, वचन और शरीर में एकता का दर्शन होता है। जिनके मन में कुछ, वाणी में कुछ और करणी में कुछ है, कथनी-करनी में अन्तर है, वे दुरात्मा लोग हैं।

गृहस्थों में दो प्रकार के मनुष्य - सदात्मा और दुरात्मा हो सकते हैं। दुर्जन विद्या का दुरुपयोग करता है, विवाद करता है तो सज्जन उसी विद्या या ज्ञान को दूसरों को बांटने का प्रयास करता है। दुर्जन के पास धन है तो वह धन उसके अहंकार का कारण बन जाता है। सज्जन आदमी के पास धन है, तो वह उसका दान करता है। दुर्जन के पास शक्ति है तो वह दूसरों को दुःख देने वाला बन जाता है वहीं सज्जन अपनी शक्ति का उपयोग दूसरों की रक्षा करने में करता है।

शास्त्रकार ने कहा है कि कंठ छेदन करने वाला दुश्मन भी उतना नुकसान नहीं करता, जितना नुकसान खुद की दुरात्मा बनी हुई आत्मा करती है। गला काटने वाला तो एक जीवन का नाश करता है, पर खुद की आत्मा यदि दुरात्मा बन जाए तो कई जन्मों तक परिभ्रमण कराने वाली, कष्ट देने वाली बन सकती है।

जब मौत निकट दिखने लगती है, तब आदमी पश्चाताप करता है कि अरे! मैंने इतने पाप किए, धर्म तो किया नहीं, अब मेरा क्या होगा? अब मुझे नरक में जाना होगा। जो दयाविहीन, धर्म न करने वाला, पापाचरण करने वाला होता है, वह इस प्रकार पश्चाताप करता है। अपनी आत्मा को दुरात्मा नहीं बनने दें, सज्जन बनें। दुर्जन नहीं बनना चाहिए और न ही दुर्जन की संगति में रहना चाहिए। गृहस्थों में भी त्यागी, प्रत्याख्यानी, मन में दया-अहिंसा की भावना रखने वाले, अच्छा विचार रखने वाले व्यक्ति भी मिलते हैं। आदमी अच्छा बने, अणुव्रत के नियम, ध्यान की साधना से भी आदमी की आत्मा निर्मलता को प्राप्त हो सकती है।

हम भगवान महावीर के आराधक हैं, पर ऐसे महापुरुष तो पूरी दुनिया के रत्न हैं, सबके लिए कल्याणकारी हैं। उनके संदेश मानव मात्र के लिए कल्याणकारी हैं। उनकी उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा में आचार्य भिक्षु हुए। उनका ज्ञान, सिद्धांत और आचार पक्ष विशिष्ट था। नवमें गुरु आचार्य श्री तुलसी और दसवें गुरु आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी, दोनों गुरु खान्देश में पधारे थे, हमारा भी आना हो गया। कई क्षेत्रों में जाना हो गया, कई क्षेत्रों की संभावना है और कुछ शेष भी रह गए। यहां धर्म की जागरणा रहे।

पूज्यवर के स्वागत में सतीष ओस्तवाल, विद्यालय के चेयरमैन मधुकर राव पाटिल, शहादा सभाध्यक्ष कैलाश संचेती, आंचलिक प्रभारी ऋषभ गेलड़ा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। स्थानीय बहू मंडल, तेरापंथ महिला मंडल शहादा ने गीत का संगान किया। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों की सुन्दर प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**